ISSN-2321-3981

सचित्र प्रेरक बाल मासिक

देवपुत्र

ज्येष्ठ २०८२ जून २०२५

कविता–अन्तरराष्ट्रीय पर्यावरण दिवस ५ जून

पर्यावरण बालगीत

– श्रीमती शोभा रानी तिवारी

चून्नू, मुन्नू सब दौड़े आओ,
हाथ में एक–एक पौधा लाओ,
उस पौधे को धरती में लगाएँ,
देखभाल करके फर्ज निभाओ।

यह धरती भारत माँ बनकर,
हम सबको वे आश्रय देती हैं,
अन्नपूर्णा बनकर हम सबका
ये लालन–पालन तो करती हैं,
फल–फूलों से लदी डालियाँ,
सभी को झुकना सिखाती हैं,
पथ–प्रदर्शक बनकर हरदम,
प्रगति की ही राह दिखाती हैं,
आओ हम सब पौधे लगाकर,
धरती माता का सम्मान करें।

लगातार पेड़ों के कटते रहने से
यह धरती रेगिस्तान बन जाएगी,
न ही यहाँ अन्न का दाना मिलेगा,
धरती तो प्यासी ही रह जाएगी,
संकल्प लें वर्षा जल को सहेजेंगे,
जंगलों को कटने से हम रोकेंगे
वृक्षारोपण करके इस धरती को,
स्वर्ग से भी सुंदर हम बनाएँगे।

– इन्दौर (म. प्र.)

सचित्र प्रेरक बाल मासिक

देवपुत्र

(विद्या भारती से सम्बद्ध)

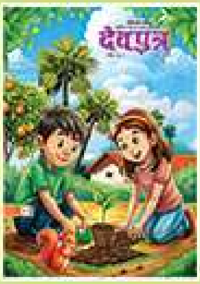

ज्येष्ठ	२०८२	▪	वर्ष	४५
जून	२०२५	▪	अंक	१२

संपादक

गोपाल माहेश्वरी

प्रबंध संपादक

नारायण चौहान

मूल्य

एक अंक	:	३० रुपये
वार्षिक	:	२०० रुपये
पन्द्रहवर्षीय	:	२००० रुपये
सामूहिक वार्षिक	:	१५० रुपये

(कम से कम १० अंक लेने पर)

कृपया शुल्क भेजते समय चैक/ड्राफ्ट पर केवल 'सरस्वती बाल कल्याण न्यास' लिखें।

संपर्क

४०, संवाद नगर,
इन्दौर ४५२००१ (म. प्र.)
दूरध्वनि: (०७३१) २४००४३९

e-mail:

व्यवस्था विभाग
devputraindore@gmail.com

संपादन विभाग
editordevputra@gmail.com

अपनी बात

प्यारे भैया–बहिनो!

मैं अपनी छोटी मुँह बोली पोती के साथ कहीं जा रहा था कि एक स्थान पर एक सन्देशपट लिखा देखा, 'वृक्ष लगाओ–विश्व बचाओ।'' मेरी दृष्टि उस सन्देश पर टिकी देखी तो पोती ने पूछा– ''क्या लिखा है दादाजी!''

''बेटी! यहाँ लिखा है कि और पेड़ नहीं लगाए गए तो ये दुनिया जल्दी ही समाप्त हो जाएगी।'' तुरंत मेरे साहित्य प्रेमी मानस में महादेवी वर्मा की पंक्तियाँ गूँज उठी ''अब यह चिड़िया कहाँ रहेगी?''

मेरी गुड़िया और महादेवी जी की चिड़िया की चिंताएँ समान हैं। वास्तव में वृक्ष ही धरा का जीवन है, हरियाली समाप्त हो जाने पर जीवन अपरिहार्य संकट में पड़ जाएगा। प्रकृति का पर्यावरण चक्र वृक्षों पर ही निर्भर है। पर्यावरण चक्र टूटा तो विज्ञान का कोई भी आविष्कार संसार को विनाश से बचा नहीं पाएगा। इसलिए अपनी आने वाली पीढ़ियों के लिए एक बार मकान बनाएँ या न बनाएँ, वृक्ष लगाएँ, वन बचाएँ। धन इकट्ठा करें या नहीं पर यह हरा सोना, यह 'हरितधन' बचाकर रखना अनिवार्य है अन्यथा भावी पीढ़ियाँ एक ऐसी कंगाली से घिरने वाली है जिसे संसार की सारी सम्पत्ति देकर भी दूर नहीं किया जा सकेगा।

यह सोचते हुए मन में एक पुराना सुभाषित नए रूप में जन्म ले रहा है

वृक्ष: एव हतो हन्ति वृक्षो रक्षति रक्षित:।

तस्मात् वृक्षं न हन्तव्यं मानोवृक्षहतोवधीत्।।

भाव है– वृक्ष को नष्ट करने पर हम नष्ट हो जाएँगे वृक्ष–रक्षित होकर हमारी रक्षा करेंगे इसलिए वृक्षों को काटो मत, मान लो वृक्ष की हत्या हमारी ही हत्या है।

वृक्षारोपण या पौधारोपण एक आयोजन या इवेन्ट नहीं। पौधारोपण करते हुए सेल्फी लेकर वायरल कर देने से कुछ काम नहीं बनेगा जब तक लगाए गए पौधे को पाल–पोस कर बड़ा नहीं करते। इसलिए गाँवों के आसपास जंगल, नगरों के आसपास हरे–भरे गाँव, अन्दर सुन्दर उद्यान और घरों के आँगन या छतों पर गृह वाटिकाएँ धरती का यह हरित श्रृंगार बने रहना अनिवार्य है। हम धरतीमाता के सुपुत्र तभी कहला सकते हैं जब माता का यह हरा आँचल नित्य नवीन बना रहे क्योंकि माँ के इसी आँचल की छाँह में ही है हमारा सुखद जीवन।

आइए, पौधे लगाएँ, वृक्ष बचाएँ और धरती माता को प्रसन्न रखें।

आपका

बड़ा भैया

web site - www.devputra.com

।। अनुक्रमणिका ।।

कहानी

- धन्यवाद काका -सुनीता पाठक ०५
- शहर के फेफड़े -डॉ. राजीव गुप्ता १४
- नहीं यह ठीक नहीं -डॉ. दर्शन सिंह आशट २०

छोटी कहानी

- कृति खुश हो गई -सुरेश सौरभ ०९
- जीवन पेड़ -प्राजक्ता देशपाण्डे ३०
- खुशी की चाबी -अलका सोनी ३६
- जादुई पुड़िया -यशपाल शर्मा 'यशस्वी' ३९
- आओ बादल -नरेन्द्र देवांगन ४४

लघुकथा

- बो कहाँ जाएँ? -सौ. पद्मा चौगाँवकर २२
- सबक -मीरा जैन ५०

आलेख

- राष्ट्रगीत वन्देमातरम्.....-विजय सिंह माली ३२

नाटक

- कचरे का साम्राज्य -डॉ. पूजा अलापुरिया 'हेमाक्ष' २४

कविता

- पर्यावरण बालगीत -शोभारानी तिवारी ०२
- संगीत का महत्व -गोपाल माहेश्वरी ०८
- आँचल में -संजय कुमार ४०
- बरगद दादा -डॉ. वीरेन्द्र कुमार भारद्वाज ४६
- दाना पानी छत पर रखना -चक्रधर शुक्ल ५०
- हम भारत के बालक -डॉ. ज्ञानप्रकाश 'पीयूष' ५१

स्तंभ

- बाल साहित्य की धरोहर डॉ. नागेश पांडेय 'संजय' १०
- छः अँगुल मुस्कान - १३
- बच्चे विशेष -रजनीकांत शुक्ल १६
- आपकी पाती ३१
- गोपाल का कमाल -तपेश भौमिक ३८
- शिशु महाभारत -मोहनलाल जोशी ४२
- पुस्तक परिचय - ४७
- मैं संघ हूँ -नारायण चौहान ४८
- स्वास्थ्य -डॉ. मनोहर भंडारी ४९

बौद्धिक क्रीडा

- भूल भुलैया -चाँद मोहम्मद घोसी १८
- पैनी नजर -राजेश गुजर ३७
- इस तरह बनाओ चीता -संकेत गोस्वामी ४१
- बूझो तो जानें -राकेश 'चक्र' ४५

चित्रकथा

- औजार वाला बक्सा -देवांशु वत्स १९
- समझ -संकेत गोस्वामी २९
- लाल बुझक्कड़ काका के ..... -देवांशु वत्स ३५

क्या आप देवपुत्र का शुल्क नेट बैंकिंग से जमा करा रहे हैं? तो कृपया ध्यान दें!

देवपुत्र का शुल्क इसकी प्रकाशन संस्था - **सरस्वती बाल कल्याण न्यास** के खाते में ही जमा कराएँ।
विवरण इस प्रकार है- खातेदार - **सरस्वती बाल कल्याण न्यास** बैंक - **स्टैट बैंक ऑफ इण्डिया, एम.वाय.एच.परिसर शाखा, इन्दौर** खाता क्रमांक-**38979903189** चालू खाता **(Current Account) IFSC- SBIN0030359** राशि जमा करने के बाद जमा पर्ची को देवपुत्र के ई-मेल **ID devputraindore@gmail.com** पर अवश्य भेजिए। नेट बैंकिंग में प्रेषक के कॉलम में पहले अपना स्थान लिखें फिर **सरस्वती शिशु मंदिर** का संक्षेप लिखें तो सन्देश ठीक आता है। उदाहरण के लिए -सरस्वती शिशु मंदिर, संजीत मार्ग, मंदसौर ने देवपुत्र का शुल्क भेजा तो उन्हें प्रेषक में लिखना चाहिए - **"मन्दसौर संजीत मार्ग SSM"** आशा है सहयोग प्रदान करेंगे।

धन्यवाद काका

– सुनीता पाठक

''तो आज भी यहाँ विवाह है.... इसका अर्थ रात को तेज डीजे बजेगा और इस धम–धम से केवल यह सारा क्षेत्र ही नहीं थरथराएगा बल्कि हमारा पेड़ भी ऐसा काँपता है कि लगता है जैसे इसकी धमक से हमारा घोंसला ही टहनी से गिर जाएगा। ओ हो! बच्चों को आज भी सहमे हुए ही रहना होगा।''

संध्या के धुंधलके में अपनी चोंच में बच्चों के लिए दाने दबाए हुए जब चिंकी चिड़िया अपने घोंसले में वापस आई तो विवाह स्थल (मैरिज गार्डन) के परिसर में अपने इस घोंसले वाले पेड़ पर भी लाइट की झालरों की तेज झिलमिलाहट से और नीचे उद्यान में बढ़ती हुई हलचल से परेशान होकर उसने मन ही मन कहा।

''माँ! लगता है आज भी हम रात को सो नहीं पाएँगे। बहुत तेज शोर–शराबे से ऐसा लगता है कि हमारा नन्हा दिल निकलकर बाहर ही आ जाएगा। कितना कठिन होता है ना इन विवाह वाले दिनों में अपने घर में भी हम चैन से नहीं रह पाते... किससे कहें... फिर हमारी सुनेगा भी तो कौन?''

''इस विवाह परिसर (मैरिज गार्डन) के आसपास रहने वाले लोग भी तो कुछ नहीं कहते... इनके घरों में भी तो बच्चे सुबह जल्दी विद्यालय जाते हैं... काका! लोगों को भी सुबह अपने काम पर निकलना होता है। उनका घर भी तो इस डीजे की धमक से थरथराता–सा होगा।

आजकल बारातें भी तो कितनी लेट आती हैं। उनकी आतिशबाजी, बारात के साथ चलने वाला साउंड सिस्टम और उसके बाद बारातियों का उत्साह में सारी रात को हल्ला करना, डीजे की आवाज को और तेज कर देना कितना असामाजिक है, अनैतिक है? लोग क्यों कुछ नहीं कहते? अपनी आपत्ति दर्ज नहीं करते?''

''कैसे कहेंगे बेटा! आज इन्हें जो यह पीड़ा होने वाली है, इतनी अधिक तेज आवाज में डीजे क्यों बजाया जा रहा है...? लोग इतनी देर से बारात क्यों ला रहे हैं.....? इतना शोरगुल और इतनी शराब पार्टी क्यों हो रही है...? इससे परेशान होकर कोसते तो हैं लेकिन जब उनके घर में ही कोई समारोह होता है, विवाह आता है, तो वह सारी नैतिकता भूलकर मौज–मस्ती के मूड में वही सारी गलतियाँ करते हैं और उस समय भी नहीं सोचते कि जिस पीड़ा को हम स्वयं भोगते हैं उसी पीड़ा को हम औरों को देने जा रहे हैं।''

''माँ! आपने यहाँ घोंसला क्यों बनाया था? शहर से बाहर कहीं घने पेड़ पर अपना घोंसला बनातीं तो कितना अच्छा होता। हम इस प्रकार के दु:ख से बचे रहते। न गाड़ियों का ध्वनि प्रदूषण, न ही डीजे की जोर की धमक ही हमको तंग करती।''

''बच्चो! अपना घोंसला बनाने से पहले हमें बहुत सारी बातों पर विचार करना होता है। जिस तरह से शहर से बाहर जंगल काट कर कॉलोनी विकसित हो रही हैं, उन नई कॉलोनी में अभी लगे पौधे केवल झाड़ी का ही रूप ले पाए हैं। वहाँ घोंसला बनाना सुरक्षित नहीं था। घने जंगलों में जंगली जानवर, साँप, बड़ी चिड़िया जैसे गिद्ध, बाज से भी अपने अंडों को सुरक्षित रखना एक टेढी खीर है। इस विवाह स्थल (मैरिज गार्डन) में हमेशा दरवाजा बंद रहता है इसलिए कुत्ते–बिल्ली का आना भी संभव नहीं है। और झालरों से सजावट से यह पेड़ और भी सुंदर हो जाता है इसलिए इस पेड़ को काटने का विचार इन लोगों के मन में नहीं आएगा... यही सोचकर कि जब मेरे अंडों से चूजे निकलेंगे तो वे जब नन्हे–पंखों के साथ उड़ना सीखेंगे तो स्वयं उड़ना सीखने के समय जब तब जमीन पर आकर चलते उन्हें क्यारियों में घूमना, थोड़ा–थोड़ा उड़ने के बाद थक कर मुलायम दूब में घूमना भी अच्छा लगेगा।

जब मैंने घोंसला बनाया था तक विवाह के मुहूर्त दूर थे इस ओर ध्यान ही नहीं गया कि जब विवाह के मुहूर्त होंगे तब इस स्थान पर जीना भी दूभर हो जाएगा।

कुछ अच्छाइयाँ देखकर उस समय इस पर विचार ही नहीं किया। बच्चो! कुछ दिन की बात है विवाह के मुहूर्त समाप्त होते ही यह स्थान फिर सूना हो जाएगा और हम सभी इसमें चैन से रह पाएँगे। केवल हमारी चहचहाहट ही इस स्थान को आकर्षक एवं सुंदर करेगी। क्या तुम्हें पता है कि हमारे बहुत से साथी स्टेशन के परिसर में लगे घने पेड़ों पर अपने घोंसले बनाकर रह रहे हैं। सारी रात की तेज जगमगाहट, रेलगाडियों के तेज हॉर्न, स्पीड में जाती थ्रू गाड़ियों की आवाज, हाई मास्क की लाइट का दिन का सा उजाला करती रोशनी में रहने में कठिनाई तो अनुभव करते हैं किन्तु वहाँ रहना उनकी मजबूरी है क्योंकि ऐसे घने पेड़ और कहाँ बचे हैं? पत्तों की छाया और ओट में रोशनी से बचते बचाते अपनी रात को बिता ही लेते हैं।'' चिंकी ने बच्चों को समझाने का प्रयास किया था।

इस कोलाहल के कारण लोग वर्षों बाद भी समारोह में आपस में मिलकर बातचीत नहीं कर पाते हैं। हाँ, साथ में सेल्फी लेकर अपनी इस भेंट को कैमरे में कैद कर लेते हैं और फिर सोशल मीडिया पर बातचीत करते हैं... क्या सोशल मीडिया पर बातचीत करना आमने-सामने मेल-मिलाप जैसा प्रभावित कर पाता है? नहीं ना... किन्तु बदलते समय के साथ यह लोग जैसे बस स्मार्टफोन की तरह स्मार्ट ही होते जा रहे हैं और मानवीय मान्यताओं को खोते जा रहे हैं।''

''बेटा! परिवर्तन तो संसार का नियम है लेकिन कुछ बदलाव हानिकारक भी होते हैं या यूँ कहें कि केवल हानिकारक ही होते हैं। जैसे कि शादी-विवाह में शुभ संस्कारों के स्थान पर केवल मौज-मस्ती नहीं ले सकती है। कभी घर के आँगन में होते मंगलाचार हमें मुँडेर पर ही मंत्रमुग्ध हो बैठकर सुनने के लिए बाध्य कर देते थे, कितना अच्छा लगता था कि बच्चे के जन्मदिन, मुंडन, जनेऊ, सगाई, ब्याह जैसे संस्कार घर के आँगन में पूरी पवित्रता और शुद्धता के साथ किए जाते थे और अब हर काम के लिए घर से बाहर मैरिज गार्डन या होटल के बैंकट हॉल बुक कर दिए जाते हैं। क्या समय आ गया है, घर के बड़े-बड़े आँगन छोटी-सी बालकनी में सिमट गए और सारे शुभ संस्कार पार्टी की मौज-मस्ती में बदल गए।

''लेकिन माँ! कोई तो इस बात को समझे कि ये बदलाव हमारी संस्कृति को समाप्त कर रहे हैं।''

''तुम बच्चों ने समझ लिया है न... तो इतने शोर में हम तो सो भी नहीं पाएँगे इसलिए लोगों को संस्कृति से जुड़ने, शोर कम करने के विनम्र संदेश, स्लोगन कल सुबह तक बना कर झालरों, पेड़ के तनों, शाखाओं पर इस प्रकार से प्रदर्शित करें कि लोगों कि दृष्टि उस पर पड़े और वे विचार करने को विवश हों।''

''माँ! हमने तो लोगों को अपनी बात मनवाने के लिए, ध्यानाकर्षित करने के लिए नारेबाजी, धरना प्रदर्शन करते हुए देखा है। क्या उसके बारे में भी सोचें?''

''अरे! नहीं बच्चो! शोर के विरोध में शोर...?

हमें तो शोर के नुकसान शांति से समझाने हैं न।''

''हाँ माँ यह भी ठीक है। आप स्लोगन बनाने में हमारी सहायता करें उन्हें अवश्य चित्रों आदि से सजा कर रंग भर कर हम आकर्षक बना देंगे।''

''तो बच्चो! मैं भी सोचती हूँ और आप भी सोचो।''

''माँ! मैंने कुछ सोचा है–
हमको शोर नहीं स्वीकार
बंद करो यह अत्याचार''

गुनगुन ने उत्साह के साथ कहा।

अरे! वाह गुनगुन, बिलकुल सही सोचा... ऐसा ही कुछ मेरे मन में भी आ रहा है।

''सुर के नाम पर असुर
लय के नाम पर प्रलय
मत लाओ,
शोर नहीं अब
सुख शांति अपनाओ।''

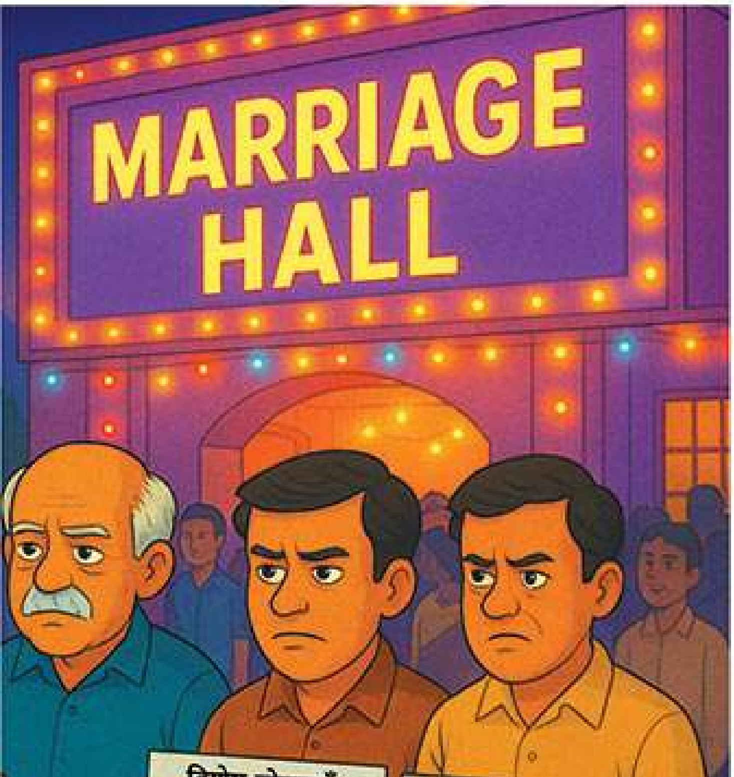

''बढ़ता शोर मन में बैचेनी देता
धरती को ध्वनि प्रदूषण देता।''

छोटू ने भी तुक मिलाई।

''हम चिड़ियों की सुनो पुकार
शोर से बढ़ता मन में विकार।''

गुनगुन ने एक और स्लोगन बनाया।

''अरे वाह! तो बच्चो! जल्दी से इन्हें लिखकर पोस्टर बनाते हैं। हमारे विनम्र विरोध का असर अवश्य होगा।''

सुबह तक तीनों रचनात्मक कार्य में व्यस्त हो गए थे। अब उन्हें यह शोर बैचेन कर एक सृजन कर्ता बना रहा था। सुबह होने से पहले वह आकर्षक और जरूरी संदेश के साथ दस स्लोगन पोस्टर बना चुके थे। इस उत्साह से किए कार्य के कारण रात भर जागने और शोर की चिड़चिड़ाहट भरी थकान भी नहीं दिख रही थी। तीनों के प्रयासों से पूरे पेड़ पर उन पोस्टर्स को इस प्रकार से लगाया कि उन्हें आसानी से गार्डन में आने–जाने वाले लोग पढ़ सकें और कोई उन्हें फाड़कर नष्ट भी न कर सकें।

सुबह अलग ही दृश्य था सभी चिड़ियों के बनाए पोस्टर्स को आश्चर्य के साथ ध्यान से पढ़ भी रहे थे। वहाँ से विदा होती बारात में सभी मन ही मन संकल्प ले चुके थे कि अब शादी में डी जे नहीं बल्कि सुमधुर धुन बजाएँगे।

विवाह स्थल (मैरिज गार्डन) के मालिक ने जब पोस्टर्स को देखा तो आश्चर्य चकित होकर आत्मग्लानि से भर गए कि उफ्फ, मैंने कभी इन मासूमों की पीड़ा के बारे में तो विचार ही नहीं किया। वे क्या कहते चुपचाप वहाँ से चले गए। हाँ किसी को फोन पर धीमे–धीमे स्वर में निर्देश देते हुए अवश्य दिखे।

चिड़िया के परिवार को निराश हो लगा कि हमारा सारा प्रयास व्यर्थ ही गया।

''माँ! लगता है कि इन काकाजी को हमारी बात और विरोध पसंद नहीं आया। वो तो यूँ ही चले जा रहे

हैं।'' गुनगुन ने थके और उतावले भरे शब्दों में कहा।

चिंकी भी निराश होकर सोचने लगी कि इस प्रकार तो बच्चे निरुत्साहित हो जाएँगे।

लेकिन कुछ ही देर बाद देखा तो विवाह स्थल (मैरिज गार्डन) के मालिक के पास एक व्यक्ति आया और एक फोल्ड किया हुआ बैनर उनके सामने खोल दिया। गार्डन के मालिक काका और उस व्यक्ति ने उस बैनर को पेड़ के पास लाकर इस प्रकार से प्रदर्शित किया कि चिड़िया रानी का परिवार शांति से पढ़ ले। बैनर को पढ़कर दोनों बच्चे ताली बजाकर प्रसन्नता से नाचने लगे। तीनों गार्डन के मालिक के पास जाकर चहचहाने लगे मानो कि उनको आनंदित होकर धन्यवाद दे रहे हों। उस बैनर कर विवाह स्थल (मैरिज गार्डन) बुक करने वालों के लिए आवश्यक और कडक नियम लिखे गए थे।

१) परिसर में आतिशबाजी चलाना मना है।

२) डी जे सिस्टम नहीं बल्कि धीमी आवाज में मधुर संगीत बजाना होगा।

३) रात दस बजे के बाद अनिवार्य रूप से संगीत बंद कर दिया जाएगा।

४) रात ग्यारह बजे के बाद परिसर का ५०% प्रकाश कम कर दिया जाएगा।

ऊर्जा को बचाने और ध्वनि प्रदूषण से धरा को बचाने में आप सभी का सहयोग अपेक्षित है।

कुछ ही पलों में इस निर्देश के पोस्टर को कार्यालय के बाहर लगाने के बाद दो युवक चिड़ियों के बनाए पोस्टर्स को पेड़ पर मजबूती से टाँग रहे थे कि जिससे विवाह स्थल (मैरिज गार्डन) में समारोह में उपस्थित लोग केवल नियम की कठोरता के कारण ही निर्देशों का पालन नहीं करें बल्कि नन्ही चिड़ियों की विनम्र गुहार को समझें और शोर शराबा न करें।

अब गुनगुन और छोटू माँ के कहने से पहले ही एक और पोस्टर बनाने और सजाने में व्यस्त हो गए थे, जिस पर लिखा था– ''धन्यवाद काका!''

– ग्वालियर (म. प्र.)

दोहे–२१ जून विश्व संगीत दिवस

संगीत का महत्व

– गोपाल माहेश्वरी

कौआ धन छीने नहीं,
कोयल न दे दान।
केवल स्वरमाधुर्य से,
मान और अपमान।।

मीठे स्वर में बोल के,
तोता खावे दाख।
जूठन खा उड़ता फिर,
काग थकावे पाँख।।

चन्द्र लजा तारे लजे,
हममें कौन प्रकाश।
भोर हुई खग–गान का,
ज्योंही हुआ उजास।।

सात सुरों से सज उठे,
जब जीवन का गीत।
बाहर भी भटकन हरे,
भीतर का संगीत।।

शब्द अर्थ नहीं जानता,
शिशु इतना अज्ञान।
तब स्वर से संवाद कर,
माता रखती ध्यान।।

– इन्दौर (म. प्र.)

कृति खुश हो गई

– सुरेश सौरभ

कृति सो कर उठी। आँखें मिलमिलाते हुए, अपनी दोनों आँखों को जैसे ही खोला, तो वह बहुत प्रसन्न हुई। वाह क्या खूब! सामने दीवार पर एक रंग-बिरंगी तितली बैठी थी। वह मचल कर बोली– ''अरे! वाह तितली रानी आज बड़े दिनों बाद तुमने दर्शन दिए। मैं तुम्हें बहुत खोज रही थी। मैं तुम्हें बहुत पसंद करती हूँ। आखिर आजकल तुम दिखाई क्यों नहीं देतीं।''

तितली निराश होकर बोली– ''वह तो इधर से जा रही थी। तुम्हारे घर की खिड़की खुली देखी, तो तुम्हारे घर में आ गई। मुझे तुम्हारी दीवारों पर लगी यह फूल-पत्ती वाली पेंटिंग्स बहुत अच्छी लगीं। क्या इन्हें तुमने बनाया है?''

कृति बोली– ''हाँ, इन चित्रों को मैंने बनाया है, तितली रानी।''

तितली– ''काश! यह चित्र असली होते, तो कितना अच्छा लगता। चलो कोई बात नहीं अब चलती हूँ।''

कृति– ''अब कब आओगी?''

तितली– ''मैं ताजे फूलों की सुगंध को पाने के लिए टहल रही हूँ। भटक रही हूँ। यह सुगंध जहाँ मिलती है, वहीं ठहर जाती हूँ? यह शहरीकरण का प्रदूषण, मेरा घर, मेरा खान-पान सब मुझसे छीन रहा है। ठीक है जा रही हूँ नमस्ते।''

कृति– ''अब कब आओगी?''

तितली– ''मैं ताजे फूलों की सुगंध को पानी के लिए टहल रही हूँ। भटक रही हूँ। यह सुगंध जहाँ मिलती है, वहीं ठहर जाती हूँ? यह शहरीकरण का प्रदूषण, मेरा घर, मेरा खान-पान सब मुझसे छीन रहा है। ठीक है जा रही हूँ नमस्ते।''

कृति– ''अरे अरे! तितली रानी थोड़ा रुको तो।'' तितली ठहर गई।

कृति– ''मैं तुमसे ये पक्का वायदा करती हूँ कि अगली बार जब तुम मेरे घर में आओगी, तब मेरी छत पर, मेरी लॉन में खूब फूल-पत्तियों वाले पेड़-पौधे पाओगी।''

तितली खुशी से झूमकर बोली– ''यदि तुम ऐसा करोगी, तो मैं तुम्हारे घर प्रतिदिन आती रहूँगी और अपने साथ अपनी रंग-बिरंगी प्यारी-प्यारी सभी सखी-सहेलियों की यानि तितलियों की टोलियाँ भी लाती रहूँगी। जिनके साथ खेलकर तुम बहुत प्रसन्न होगी। ठीक है, देर हो रही है, अब चलती हूँ नमस्ते।'' सर सर सर.... तितली उड़ गई।

अब कृति अपने पिताजी के साथ घर के गमलों में, क्यारियों में फूल-पौधों को रोपने के लिए पौधशाला की ओर चल पड़ी।

– लखीमपुर खीरी (उ. प्र.)

बाल कथा साहित्य के कुशल शिल्पी : अमृतलाल नागर

प्रस्तोता – डॉ. नागेश पाण्डेय 'संजय'

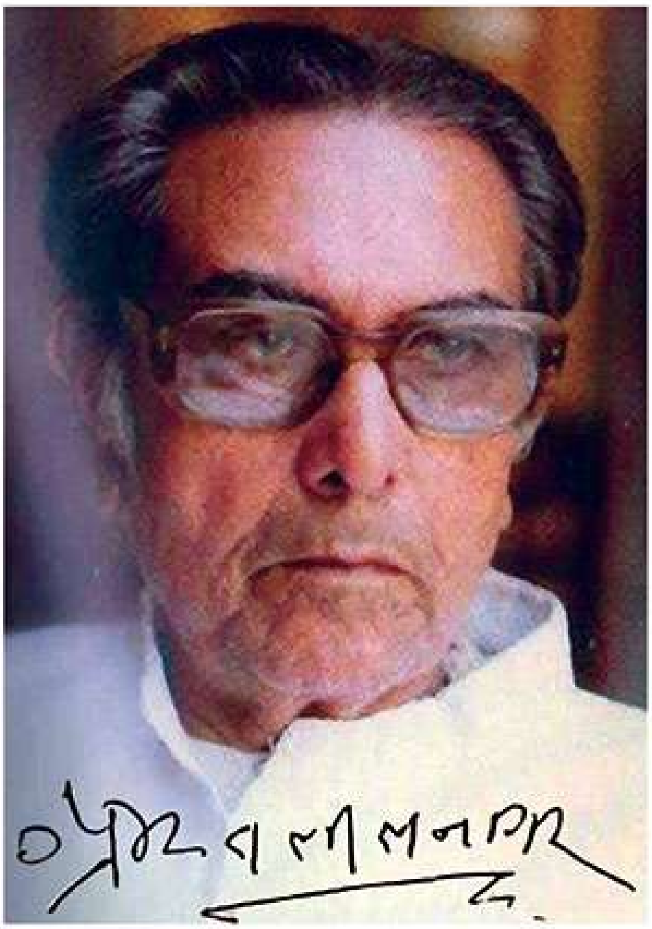

'मानस का हंस' और 'खंजन नयन' जैसी अनेक अमर कृतियों के सर्जक प्रख्यात लेखक अमृतलाल नागर ने बच्चों के लिए भी खूब लिखा है। वे लेखक ही नहीं, बाल कहानियों के कुशल वाचक भी थे। उनकी किस्सागोई शैली गजब की थी। उनकी बाल कहानियाँ और उपन्यास आज भी बाल साहित्य की अमूल्य निधि हैं जिन्हें प्रगतिशील मनोरंजक साहित्य की श्रेणी में रखा जाता है।

अमृतलाल नागर जी का जन्म १७ अगस्त १९१६ को आगरा (उ. प्र.) के गोकुलपुरा में राजाराम नागर और विद्यावती नागर की संतान के रूप में हुआ।

वे बचपन से ही अनन्य थे। समाज की घटनाओं को लेकर वे चिंता भी करते थे और चिंतन भी। उन्होंने मात्र पंद्रह वर्ष की अवस्था में पहली कहानी 'प्रायश्चित' लिख डाली थी और जब उनका पहला कहानी-संग्रह वाटिका प्रकाशित हुआ तो वे मात्र उन्नीस वर्ष के थे।

नागर जी ने आकाशवाणी में भी कार्य किया। पत्रकारिता में भी पारंगत थे। उन्होंने चकल्लस साप्ताहिक का संपादन किया। अनुवाद के क्षेत्र में भी उनका अवदान है। उनका गुजराती, मराठी, बांग्ला और अँग्रेजी पर अधिकार था।

नागर जी ने आजादी से पहले बाल साहित्य लिखना शुरू किया। बाल साहित्य लेखन के अतिरिक्त उसके स्वरूप पर चिंतन की दिशा में भी उनका उल्लेखनीय कार्य है। उन्होंने बाल कहानी, बाल उपन्यास, बाल कविता, पद्यकथा, जीवनी और रेडियो बाल नाटक लिखकर बाल साहित्य का भंडार भरा।

बाल साहित्य की उनकी प्रमुख कृतियाँ हैं– नटखट चाची, निंदिया आ जा, बजरंगी नौरंगी, बजरंगी पहलवान, बाल महाभारत, इतिहास झरोखे, बजरंग स्मगलरों के फंदे में, हमारे युग निर्माता, यह सुखद है कि शरद नागर के संपादन में संपूर्ण बाल रचनाएँ शीर्षक से प्रकाशित पुस्तक में उनकी प्रतिनिधि रचनाएँ एक जिल्द में उपलब्ध हो गई हैं।

नागर जी बड़े स्वप्नों के दृष्टा और सृष्टा थे। जी हाँ, बच्चों में लीक से हटकर कुछ नए सपनों को जगाने के सृष्टा। इसीलिए वे बाल मित्र थे। २३ फरवरी १९९० को उनका निधन हो गया।

बाल कथा साहित्य के क्षेत्र में उनके विशिष्ट योगदान को देखते हुए उत्तर प्रदेश हिंदी संस्थान उनकी स्मृति में अमृतलाल नागर बाल कथा सम्मान प्रदान करता है। आइए, पढ़ते हैं उनकी एक मजेदार कहानी।

सात पूँछों वाला चीकू

चूहों की बस्ती में दो चुहियों के ऐसे अनोखे बच्चे हुए कि चारों ओर उनकी धूम मच गई। मुगरी के एक बेटे के सिर पर रोओं का एक सफेद तिलक बना था और उसके शरीर पर सफेद गोल चित्तियाँ थीं। किन्तु उसकी अनोखी विशेषता यह थी कि उसकी एक के बजाय सात पूँछें थी। वह जब चलता तो उसकी सातों पूँछें सूरज की किरणों के समान लहराती हुई चलती थीं। देखने वाले कहते कि यह दोनों चूहे बस्ती की शोभा हैं। किन्तु उसमें भी सुगरी के सात पूँछों वाले बच्चे की सुन्दरता बहुत बखानी जाती थी, जिसे सुन-सुनकर मुगरी चुहिया को बड़ी जलन होती थी। वह सोचती कि यदि भगवान ने उसके बेटे मीकू को भी ऐसी ही सुन्दर पूँछें दी होतीं तो दुनिया भर के चूहों में से वही अनोखा और सुन्दर माना जाता।

एक बार अजायबघर के दो फोटोग्राफर अचानक चूहों की बस्ती में पहुँच गए। उस समय मुगरी का बेटा मीकू दूसरे चूहे बच्चों के साथ आँख-मिचौनी खेल रहा था और मुगरी अपने बिल के बाहर बैठी उनका खेल देखकर प्रसन्न हो रही थी। तभी एक फोटोग्राफर ने दूसरे से कहा- ''अरे! देखो तो यह चूहा बच्चा कितना अनोखा और सुन्दर है।''

मीकू की माँ मुगरी यह सुनकर बहुत ही प्रसन्न हुई। किन्तु तभी दूसरे फोटोग्राफर ने सुगरी के सात पूँछों वाले बेटे चीकू को एक झाड़ी के पीछे से आते हुए देखा। वह उसकी लहराती हुई पूँछें देखकर बहुत ही प्रसन्न हुआ। उसने अपने मित्र से कहा- ''अरे भाई! यह चूहा तो सबसे सुन्दर है। ऐसा सात पूँछों वाला चूहा इसके सिवाय दूसरा नहीं मिलेगा।''

दोनों फोटोग्राफरों ने कहा- ''हाँ! ये सात पूँछ वाला चूहा ही सबसे सुन्दर है।'' दोनों ने ही यह तय किया कि एक महीने बाद जब हम फिर आएँगे, तब

अपने साथ अपने-अपने कैमरे अवश्य लाएँगे और इन दोनों चूहों की फोटो और फिल्म खींचेंगे। दुनिया भर में हमारा और इन चूहों का नाम हो जाएगा। यह कह दोनों फोटोग्राफर अपने-अपने रास्ते चले गए।

मीकू और उसकी माँ को यह सुनकर बड़ी जलन हुई कि फोटोग्राफरों ने चीकू को अनोखा और सबसे सुन्दर चूहा बतलाया। मीकू अपनी माँ से लिपटकर खूब रोया कि माँ! माँ! उन लोगों ने मुझको अनोखा चूहा नहीं बताया। मुगरी ईर्ष्या और क्रोध के मारे मन ही मन जल रही थी। उसने अपने बेटे मीकू को प्यार करके कहा- ''बेटा! तू रो मत, मैं तुझे ही दुनिया का सबसे अनोखा चूहा साबित कर दूँगी।''

सात पूँछों वाला मीकू बहुत सुन्दर और अनोखा तो था, किन्तु बुद्धि कम थी। उधर मीकू की माँ मुगरी ने हलवाई के घर से ढेर सारी मिठाइयाँ चुरा कर बस्ती के दूसरे चूहा बच्चों को खिलाई। उसने उन्हें यह भी सिखला दिया कि जब चीकू बाहर गलियों में खेलने के लिए निकले या पढ़ने के लिए चूहा शाला में जाए, तब तुम उसे यह कहकर चिढ़ाया करो- ''चीकू तो सात पूँछ का रे! चीकू तो सात पूँछ का रे!''

चूहा बच्चों को मिठाई मिली और ऊपर से हँसी का एक नया खेल मिला। वे सब चीकू को हर जगह चिढ़ाने लगे- ''चीकू तो सात पूँछ का रे! चीकू तो सात पूँछ का रे!''

उसका घर से बाहर निकलना दूभर हो गया। चूहा शाला जाते समय, उद्यान में घूमते हुए, बाजार जाते हुए, जहाँ कहीं चीकू दिखता सब मिलकर उसे छेड़ने लगते। अपने साथियों के साथ जब वह खेलने के लिए जाए, तब सब कह देते। हम सात पूँछ वाले को नहीं खिलाएँगे। बेचारा चीकू घर आकर फूट-फूट कर रोता और माँ से कहता- ''माँ! डॉक्टर साहब से मेरी एक पूँछ कटवा दो। बच्चे मुझे बहुत छेड़ते हैं। साथ नहीं खिलाते हैं।''

उसकी माँ उसे समझाती कि- ''सात पूँछ भगवान ने दी है, उन्हें मत कटवा बेटा! तेरी ये अनोखी पूँछें बहुत सुन्दर लगती हैं।''

सुगरी रोज-रोज बेटे के रोने से दु:खी हो गई और एक दिन चूहा डॉक्टर मूसरचन्द के यहाँ ले गई। डॉक्टर मूसरचन्द ने चीकू की एक पूँछ काटकर मरहम-पट्टी कर दी। पूँछ कटाते समय उसे दर्द तो बहुत हुआ पर वह प्रसन्न था कि उसे अब न कोई छेड़ेगा न खेलने से रोकेगा।

कटी पूँछ के दर्द के बाद भी वह हँसता हुआ चीकू अपने साथियों के पास जैसे ही पहुँचा, तो सब के सब ठठाकर हँसने लगे और ताली बजा-बजाकर उसे घेरकर नाचने लगे और कोरस में गाने लगे-

''देखो रे देखो भैया! चीकू की एक पूँछ कट गई छ: पूँछ रह गई।

''अरे! चीकू तो छ: पूँछ का रे! एक पूँछ कट गई, छ: पूँछ रह गई।''

चीकू बेचारा रोता हुआ आया और माँ से लिपट कर रोने लगा- ''माँ! मेरी एक पूँछ और कटवा दो।''

डॉक्टर का क्या जाता था। सुगरी से पाँच सौ रुपये फीस लेकर एक पूँछ और काट दी। अब चीकू बड़ा प्रसन्न था अब कोई कुछ न कहेगा लेकिन ; जब वे उद्यान में अपने संगी-साथियों के साथ खेलने पहुँचे, तब वे सब फिर तालियाँ बजाकर उसके चारों ओर गोल-गोल नाचते जाएँ और हँसते जाएँ।

''देखो रे - देखो भैया। चीकू की दो पूँछ कट गई-पाँच पूँछ रह गई। अरे चीकू तो पाँच पूँछ का रे! दो पूँछ कट गई, पाँच पूँछ रह गई।''

बेचारे चीकू को उसकी सुगरी माँ ने समझाया कि- ''बेटा! सबको बकने दो, तुम अपना ध्यान पढ़ने-लिखने में लगाओ।'' लेकिन चीकू को कोई बात समझ ही में न आती।

वह रोज पूँछ कटाने की ही जिद करता। एक-एक करके उसने अपनी छ: पूँछ कटवा डालीं। छठी

पूँछ कटने के बाद उसने सोचा कि अब तो अपने और साथियों की तरह एक ही पूँछ रह गई है। अब न तो उसे कोई छेड़ेगा और न खेलने से रोकेगा। लेकिन बेचारा चीकू जब उद्यान में पहुँचा, तब उसके साथी खूब जोर से हँसे और पहले की तरह ही गा–गाकर उसके चारों ओर नाचने लगे।

''देखो रे – देखो भैया! सतपुँछे चीकू भैया की छः पूँछ कट गई एक पूँछ रह गई।''

इस बार दुखी चीकू माँ के पास न जाकर सीधा डॉक्टर मूसरचन्द के पास पहुँच कर बोला– ''डॉक्टर जी! आप ये दुम भी काट दीजिए पैसा अम्मा दे जाएँगी।''

डॉक्टर को तो बस टके से काम था। उसने चीकू की बची हुई इकलौती पूँछ भी काट कर पट्टी बाँध दी।

चीकू दर्द से कराहता लेकिन, यह सोचकर प्रसन्न होता हुआ अपने साथियों के पास आया कि अब कोई क्या छेड़ेगा ? न रहा बाँस, न बजेगी बाँसुरी। लेकिन ; उसके साथी अब तो हो–होकर हँसते जाएँ, ताली बजाते जाएँ और उसके चारों ओर गोल–गोल नाचते जाएँ और गाते जाएँ–

''देखो रे – देखो भैया! पूँछ कटा चीकू आ गया। सात पूँछ कट गई–पूँछ कटा चीकू आ गया।''

बेचारा चीकू दु:खी होकर डॉक्टर मूसरचन्द के पास गया और कहा कि– ''आप चाहे जितनी फीस ले लीजिए लेकिन मेरी सातों पूँछें फिर से जोड़ दीजिए।''

डॉक्टर ने कहा– ''कि अरे बुद्धू! कटी पूँछें अब जुड़ नहीं सकतीं। जब तेरी माँ ने तुझे समझाया था, तब तू नहीं समझा, इसीलिए कहा है–

बिना विचारे जो करे, सो पाछे पछताय।
काम बिगाड़े आपनो, जग में होत हँसाय।।''

– शाहजहाँपुर (उ. प्र.)

छः अँगुल मुस्कान

पत्नी– आप मुझे नाम लेकर बुलाते हैं, यह सुनकर बच्चे भी मुझे नाम लेकर बुलाने लगे हैं।

पति– अच्छा, तो क्या आज से मैं तुम्हें मम्मी कहकर बुलाऊँ ?

*****

प्रोफेसर– कक्षा तो ७ बजे ही प्रारंभ हो जाती है। तुम १० बजे क्यों आ रहे हो ?

विद्यार्थी– श्रीमान् आप मेरी पढ़ाई की इतना चिंता न करें समय से कक्षा प्रारंभ कर दिया करें।

*****

सब्जी वाला सब्जी पर पानी छिड़क रहा था, काफी देर हो गई।

ग्राहक क्रोध में बोला, भाई साहब! यदि भिंडी को होश आ गया हो तो एक किलो दे दो।

*****

ग्राहक– एक तो तुमने मेरी शर्ट गुम कर दी, ऊपर से धुलाई के पैसे माँग रहे हो ?

धोबी– साहब! आपकी शर्ट धुलने के बाद ही गुम हुई थी।

– शाहजहाँपुर (उ. प्र.)

शहर के फेफड़े

– डॉ. राजीव गुप्ता

गर्मियों में राजू अपने दादाजी के पास गया था। उसके दादाजी लखनऊ में उसके चाचाजी के पास रहते थे।

दादाजी सुबह–सुबह तैयार होकर घूमने निकल पड़ते। राजू पड़ा–पड़ा सोता रहता। परीक्षा देने के बाद उसकी छुट्टियाँ हो गई थीं। वह मस्ती के मूड में था। सुबह देर से उठना और सारे दिन टी. वी. के सामने बैठे–बैठे पिक्चर देखना। चाचीजी उसको बहुत प्यार करती थी। दिनभर कुछ–न–कुछ खिलाती ही रहती थीं।

वह अपने घर में भी ऐसा ही करता था। फास्ट–फूड उसे बहुत अच्छा लगता था। खा–खाकर वह मोटा और थुलथुल हो रहा था। जल्दी–जल्दी चलता तो हाँफने लगता। दादाजी को उसके स्वास्थ्य की चिंता हुई। उन्होंने उससे कई बार सुबह उठकर दौड़ लगाने के लिए कहा। पर वह टस से मस नहीं हुआ। दादाजी ने उसे सुधारने की सोची।

''क्या तुमने कभी शहर के फेफड़े देखें हैं?'' एक दिन दादाजी ने उससे पूछा।

''शहर के फेफड़े? नहीं तो, मैंने सुना तक नहीं?'' राजू को आश्चर्य हुआ।

''अरे वाह! देखोगे? दादाजी ने पूरी गंभीरता से पूछा।

''हाँ! क्यों नहीं? यह मुझे कहाँ देखने को मिलेंगे, दादाजी?'' राजू की जिज्ञासा बढ़ती जा रही थी।

''यहीं लखनऊ शहर में।'' दादाजी ने कहा।

''तो आप मुझे शहर के फेफड़े कब दिखाने ले जाएँगे?'' उतावलेपन से राजू ने पूछा।

''कल सुबह! तभी मजा भी आएगा। पर इसके लिए तुम्हें जल्दी उठना पड़ेगा, उठ सकोगे?'' दादाजी ने कहा।

''हाँ–हाँ अवश्य दादाजी! क्यों नहीं? शहर के फेफड़े तो मैं पहली बार देखूँगा।''

दूसरे दिन राजू सुबह–सुबह ही उठ गया। उसे डर था कि दादाजी कहीं उसे छोड़कर टहलने न निकल जाएँ।

''दादाजी! मैं तैयार हूँ।'' उसने जूते पहनते हुए कहा।

''ओह! बहुत अच्छा। लो मैं भी तैयार हूँ। चलो चलते हैं; दादाजी ने मुस्कुराते हुए कहा।

टहलते–टहलते और बात करते हुए वे दोनों बुद्‌वा उद्यान जा पहुँचे।

''लो भई! आ गए शहर के फेफड़े।'' दादाजी ने उद्यान में प्रवेश करते समय कहा।

''कहाँ? यह तो उद्यान है, दादाजी यहाँ तो मैं कई बार आ चुका हूँ।'' राजू इधर-उधर देखते हुए बोला।

''बेटा! शहर के बीच में बने उद्यान को ही तो शहर का फेफड़ा कहते हैं।'' दादाजी ने हँसते हुए कहा।

''वह क्यों दादाजी?'' उसे दादाजी की पहेलियाँ समझ में नहीं आ रही थी।

''अच्छा बताओ तो तुम्हारे फेफड़े क्या काम करते हैं?'' दादाजी ने पूछा।

''हमारे फेफड़े हमारे शरीर से जहरीली कॉर्बनडाई ऑक्साइड को निकाल बाहर करते हैं।'' राजू ने बताया।

''बहुत अच्छा, और?'' दादाजी ने उसका उत्साह बढ़ाते हुए पूछा।

''और ये शुद्ध हवा को अपने अंदर खींच लेते हैं, जिससे हमारे शरीर को ऑक्सीजन मिलती है। बिना ऑक्सीजन के तो हम जीवित ही नहीं रह सकते हैं, दादाजी।'' राजू ने बड़े ही उत्साह से बताया।

''वाह! तुम्हें तो सब कुछ ज्ञात है।'' दादाजी ने उसकी प्रशंसा की।

''ठीक फेफड़ों की तरह ही ये उद्यान भी काम करते हैं। उद्यान में लगे हुए पेड़-पौधे शहर भर की कॉर्बन डाइ ऑक्साइड का उपयोग अपना भोजन बनाने में कर लेते हैं। पता है इस काम को क्या कहते हैं?'' दादाजी ने पूछा।

''हाँ इसे प्रकाश संश्लेषण कहते हैं। अपना भोजन हरे पेड़-पौधे स्वयं ही बना लेते हैं। इसके लिए उन्हें क्लोरोफिल, कॉर्बन डाइ ऑक्साइड और सूर्य के प्रकाश की आवश्यकता होती है। भोजन बनाने के समय सभी पेड़-पौधे ऑक्सीजन छोड़ते हैं।'' राजू ने बताया।

''तो हुए न उद्यान हमारे शहर के फेफड़े?'' दादाजी ने हँसते हुए कहा।

''हाँ दादाजी! ऐसा तो मैंने सोचा ही नहीं था। आप बिल्कुल ठीक कहते हैं। शहर के बीच में बने हुए ये उद्यान भी ठीक हमारे फेफड़ों की तरह ही सारे शहर को ऑक्सीजन देते हैं। इसलिए इन्हें शहर के फेफड़े कहना ही ठीक है।''

राजू ने मुस्कुराते हुए कहा।

''और सुबह की सैर के बारे में तुम्हारा क्या कहना है?'' दादाजी ने हँसते हुए पूछा।

''बस आनन्द आ गया दादाजी। अब मैं प्रतिदिन आपके साथ प्रातः भ्रमण किया करूँगा।'' जब राजू ने कहा तो दादाजी मुस्कुराए बिना नहीं रह सके।

– बाग कूंचा,
फर्रुखाबाद (उ. प्र.)

मदद की पुकार

– रजनीकांत शुक्ल

एक समय दुनिया में शिक्षा का बड़ा केन्द्र रहा नालंदा विश्वविद्यालय भारत के बिहार राज्य में है और महात्मा बुद्ध के ज्ञान प्राप्ति का स्थल बोधगया है और महावीर स्वामी की जन्मस्थली वैशाली जैसा महत्वपूर्ण प्राचीन स्थल भी है।

इसी के साथ इतिहास प्रसिद्ध सम्राट अशोक, खालसा पंथ के संस्थापक गुरु गोविन्द सिंह, देश के प्रथम राष्ट्रपति डॉ. राजेन्द्र प्रसाद ने भी बिहार राज्य में जन्म लिया था।

आज के नए दौर में भी गर्व करने के क्षण जिन्होंने बिहार राज्य को प्रदान किए उनमें एक नन्हे सौरभ हैं, जिन्हें राष्ट्रपति महोदया द्रोपदी मुर्मू जी ने वीर बालदिवस के अवसर पर २६ दिसम्बर २०२४ को प्रधानमंत्री राष्ट्रीय बाल पुरस्कार से सम्मानित किया।

आखिर ऐसा क्या किया था सौरभ ने। आइए बताते हैं।

बिहार में शोखपुरा नाम का एक जिला है जिसके किशनपुरा नामक गाँव में पिन्टू राउत रहते हैं। सीधे सादे गरीब मनरेगा मजदूर। काम नहीं मिलता तो अपनी पत्नी रेखा के साथ दूर–दराज पंजाब जैसे राज्यों में निकल जाते जहाँ उन्हें काम मिल जाता। दोनों पति–पत्नी मिलकर मेहनत करते और अपने परिवार का पेट पालते। उनका परिवार जिसमें बड़ा बेटा विक्रम, गोलू, सोहन, सौरभ और गौरीशंकर।

सबसे छोटे–बेटे गौरीशंकर का जन्म पंजाब में हुआ था जब पिन्टू वहाँ मजदूरी कर रहे थे। गौरीशंकर दिव्यांग पैदा हुआ। धन के अभाव में पिन्टू उसका उपचार न करा सके। ऐसे में जब वतन की याद आई तो पिन्टू रुक न सके और अपने घर किशनपुरा लौट आए। जहाँ वे अपने बड़े भाई रामाधीन राउत के साथ गाँव के लोगों की खेती बँटाई पर लेते। मिल जाती तो मजदूरी भी करते इस प्रकार वे अपने परिवार को पाल–पोस रहे थे।

यह चौमासों की बात है। तब सावन का महीना चल रहा था। आसमान में बादलों की आवाजाही खूब हो रही थी। वर्षा रानी भी आसमान से पानी के उन मोतियों को धरती पर बिखरा रहीं थीं। जो धरती को हरा–भरा बनाकर धूप और हवा की सहायता से उसे सोने में बदल देती हैं। इस तरह वर्षा किसानों की मेहनत को सफल बनाने में अपना योगदान देती हैं। प्यासे तालाबों की प्यास बुझाकर उन्हें जल से परिपूरित कर देती हैं।

किशनपुरा में भी बादलों की मेहरबानी बरस

रही थी। ऐसे में एक दिन जब पिन्टू अपने घर में ही थे तो बाहर ओसारे में बँधी भैंस रँभाने लगी।

लगता है भैंस प्यासी है। पिन्टू ने सोचा।

उन्होंने कक्षा तीन में पढ़ने वाले अपने बेटे सौरभ को आवाज दी और कहा कि जाओ, जरा भैंस को तालाब से पानी पिला लाओ।

सौरभ ने भी आज्ञाकारी बेटे की तरह पिता की आज्ञा को सुनते ही ओसारे की दौड़ लगाई और भैंस को खोलकर तालाब की ओर चल दिया। भैंस अधिकांश उस तालाब में पानी पीने जाया करती थी इसीलिए उसे रास्ता पता था। वह मंथर गति से तालाब की ओर चल दी। उसके पीछे–पीछे सौरभ भी चल रहा था।

उसके घर से तालाब के बीच में मुश्किल से तीन–चार खेत पड़ते थे सो जल्दी ही दोनों तालाब के पास जा पहुँचे। सौरभ ने तालाब की ओर दृष्टि डाली तो उसे वहाँ कुछ हलचल, शोर सुनाई दिया। सौरभ ने भैंस को पीछे छोड़ते हुए तालाब की ओर दौड़ लगा दी।

वहाँ उसने देखा कि गाँव की कुछ लड़कियाँ तालाब में डूब रही हैं। यह देखकर सौरभ तुरन्त दौड़ा और तालाब में कूद गया। उसने तेजी से आगे बढ़कर

उनमें से एक लड़की को किनारे की ओर खींच लिया। उसे किनारे पानी के ऊपर छोड़कर वह दूसरी लड़की को बचाने के लिए दौड़ पड़ा। उसने दूसरी लड़की को भी पकड़ा लेकिन वह उससे आयु बड़ी और वजन में भारी थी। किन्तु उस समय सौरभ का लक्ष्य कैसे भी उसे पानी से बाहर निकालकर लाना था। अपनी पूरी ताकत लगाकर वह उसे किनारे की ओर खींचने लगा और अपने इस प्रयास में वह सफल भी रहा। उसने उस लड़की की जान भी बचा ली थी।

किन्तु सौरभ का काम अभी पूरा नहीं हुआ था। तालाब के पानी में अभी कोई और भी था। ऐसा उस लड़की ने बताया जिसे सौरभ ने सबसे पहले बचाया था। हालाँकि सौरभ अपने से बड़ी उन दो लड़कियों को बचाकर सुरक्षित पानी के बाहर निकाल लाया था। और इस काम में उसकी काफी ताकत खर्च हो चुकी थी। फिर भी सौरभ ने एक बार हिम्मत की और तीसरे डूबते को बचाने के लिए तालाब के पानी में कूद गया।

घर के पास तालाब होने के कारण अधिकांश वह मित्रों के साथ उसमें किलोलें करने आता रहता था। उसे तैरना आता था किन्तु वह अभी मात्र नौ वर्ष का था। इतनी कम आयु में अपने से भारी वजन की दो लड़कियों को वह पानी के अन्दर से निकाल लाया था। दूसरे की जान बचाने का साहस और हिम्मत के कारण उसने अपने बारे में न सोचकर डूबने वाले के बारे में विचार किया और आगे बढ़ गया।

इस बार उसे तीसरी लड़की को तालाब से बाहर लाना भारी पड़ गया। किन्तु फिर भी वह हिम्मत करते हुए उसे पानी से खींचकर बाहर लाने लगा। इतने में तालाब की ओर उसके ताऊ जी रामाधीन राउत आ निकले। उन्होंने जब सौरभ को तालाब के अन्दर से उस तीसरी लड़की को बाहर लाते देखा तो दौड़कर तालाब के निकट आ गए। उन्होंने आगे बढ़कर सौरभ को सहारा दिया और उन्हें तालाब से बाहर आने में सहायता की।

दो लड़कियों को लम्बी–लम्बी साँसें लेते और तीसरी को पेट में पानी जाने के कारण अचेत देख उन्होंने सारा माजरा पूछा। वे तीसरी लड़की के पेट से पानी निकालकर उसे होश में लाने का प्रयास करने लगे।

तभी अपनी साँसों को संयत करती हुई एक लड़की चिल्लाकर बोली। अभी एक लड़की तालाब के पानी के अन्दर और है। इतना सुनना था कि रामाधीन सनाका खा गए क्योंकि वहाँ सामने दिख रहे तालाब के पानी में तो कोई हलचल नहीं थी। तो फिर जिसके बारे में इस लड़की ने बताया वह लड़की कहाँ हैं ?

इसी में है। इसी तालाब के पानी में। कहते–कहते उस लड़की की रुलाई फूट पड़ी।

अब रामाधीन से एक पल भी नहीं रुका गया और वे झट से तालाब के पानी में कूट गए। उन्होंने देखा कि सचमुच एक और लड़की तालाब के पानी में थी। उन्होंने तुरन्त आगे बढ़कर उसे जा पकड़ा और उसे लेकर वे तेजी से तालाब से बाहर आए। उन्होंने देखा कि उसके शरीर में कोई हलचल नहीं हो रही थी।

इतनी देर में गाँव के लोगों की भीड़ तालाब के आसपास जमा हो चुकी थी। जितने मुँह उतनी बातें जल्दी ही उन्हें अस्पताल ले जाया गया लेकिन उस आखिर में निकाली गई लड़की की जान नहीं बचाई जा सकी।

सौरभ ने तीन बालिकाओं मुस्कान, मेहर और प्रीति कुमारी की जान बचाकर असाधारण सूझबूझ का परिचय दिया। शोखपुरा की जिलाधिकारी जे. प्रियदर्शिनी ने सौरभ के इस जीवनरक्षक प्रयास और अविश्वसनीय वीरतापूर्ण कार्य को मान्यता देते हुए प्रशस्ति–पत्र देकर सम्मानित किया।

सौरभ को राजधानी दिल्ली में वीर बाल दिवस २६ दिसम्बर २०२५ को आमंत्रित कर देश की राष्ट्रपति महोदया श्रीमती द्रौपदी मुर्मू जी ने 'प्रधानमंत्री राष्ट्रीय बाल पुरस्कार' से सम्मानित किया।

नन्हे मित्रो!

जागो उठो नहीं रुकना तुम, कह गए लोग पुराने,
हम तो हैं नन्हे वीर सिपाही अपनी मंजिल जाने।
अपनी धुन में मगन रहें हम, गाते अपने गाने,
दिल कहता है जिसे हमेशा हम उसको ही माने।।

– नई दिल्ली

भूल–भुलैया

छ से छतरी

– चाँद मो. घोसी

पाठशाला जाने के लिए सरिता जैसे ही घर से बाहर निकली, वर्षा आरंभ हो गई। वर्षा से बचाव के लिए अब उसे छतरी की आवश्यकता पड़ गई।

प्रिय मित्रो! सही मार्ग आप सरिता को छतरी के पास पहुँचा दीजिए।

– मेड़ता सिटी, (राजस्थान)

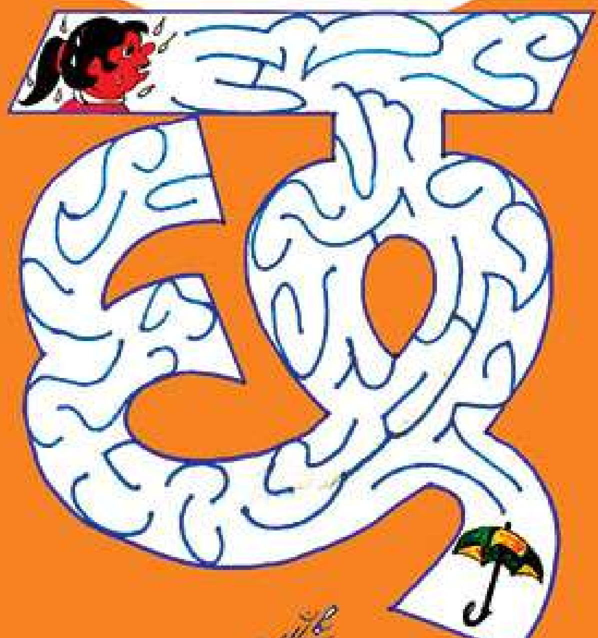

औजार वाला बक्सा
चित्रकथाः देवांशु वत्स
एक दिन राम खेल रहा था। तभी पड़ोस के दंत चिकित्सक काका ने कहा-
राम, आज मेरा सहयोगी नहीं आया। एक मरीज के घर साथ चलोगे?
क्यों नहीं काका जी!
मरीज के घर...
महोदय, जल्दी कीजिए!
अभी करता हूं!
राम, दरवाजा लगा दो!
थोड़ी देर बाद...
काकी, जरा पेचकस दीजिए।
यह लो।
कुछ देर बाद...
पिलास दीजिए!
अभी लाई!
फिर कुछ देर बाद...
हथौड़ी है काकी जी?
ओह!
हथौड़ी लो! क्या दाँत उखड़ नहीं रहा क्या?
काकी जी...
...दाँत तो तब उखड़ेगा न, पहले औजार वाला बक्सा तो खुल जाए!

नहीं यह ठीक नहीं

– डॉ. दर्शन सिंह आशट

सतविन्दर पढ़ने लिखने में तो काफी तेज था किन्तु शरारतें करने में भी नंबर वन था। एक दिन आधी छुट्टी के समय सतविन्दर अपने कुछ साथियों साथ शरारतें करता हुआ फूलों वाली क्यारियों में जा घुसा। परिणाम स्वरूप उसके पैरों के नीचे आकर कई पौधे मसले गए। फूल भी टूट गए और दो–चार शाखाएँ भी।

कुछ दूरी पर शाला का माली परमजीत शाला की क्यारियों में नए पौधे रोप रहा था। जब माली ने यह सब देखा तो उसने दूर से ही सतविन्दर को ललकारा– ''अरे बदमाश! क्या कर रहा है? दिखाई नहीं देता क्या?''

वही बात हुई जिसका डर था। माली परमजीत ने टूटे फूल और शाखाएँ उठाकर प्राचार्य साहब के पास जाकर सतविन्दर की शिकायत कर दी। प्राचार्य जी बोले– ''सतविन्दर! यह ठीक है कि तुम अपनी कक्षा में प्रथम आते हो। लेकिन पुन: ऐसी गलती की तो दण्ड अवश्य मिलेगा।''

बात सतविन्दर के सभी मित्रों तक पहुँच चुकी थी। उसने अपना अपमान अनुभव किया।

अगला दिन रविवार था। सतविन्दर शाला के पास आया और दीवार पर चढ़कर शाला के परिसर में छलांग लगा दी। उसने सबसे पहले शाला की तीनों टोंटियों को पूरा खोल दिया। पानी तेजी से बहने लगा। सतविन्दर ने पानी का मोड़ उन्हीं क्यारियों की ओर कर दिया जहाँ आज परमजीत ने नन्हे–नन्हे पौधे लगाए थे। इन्हीं क्यारियों के साथ ही वह मैदान भी था जहाँ प्रतिदिन प्रार्थना होती थी। क्यारियों से होता हुआ पानी उसी मैदान में ही जाना था। वह चुपचाप घर आ गया।

सतविन्दर नहाने के लिए बाथरूम में गया। उसने ज्यों ही नहाने के लिए टोंटी खोली तो पानी की बूँद तक नीचे न गिरीं।

''धत् तेरे की! यह क्या हो गया जल–विभाग वालों को।'' टोंटी से पानी बहता न देख सतविन्दर ने जल विभाग वालों पर क्रोध किया। फिर माँ से पूछा– ''बेबे! आज टोंटी में पानी क्यों नहीं? जब हम पानी का बिल देते हैं तो जल विभाग वाले हमें पूरा पानी क्यों नहीं देते? बिजली वालों का भी ऐसा हाल है।'' सतविन्दर का चेहरा तिलमिलाया हुआ था।

सतविन्दर की माँ बोलीं– ''आज अपने मोहल्ले वाली टंकी के कर्मचारी सूचना करके गए थे कि उनके विभाग ने निर्णय लिया है कि अब अलग–अलग मोहल्लों में दिन में दो बार पानी का सप्लाय बंद किया जाएगा। यह बंद एक–एक घंटे का होगा। पानी

की बचत करने के लिए ही विभाग ने ऐसा निर्णय लिया है जो सबके हित में है।''

सतविन्दर को लगा जैसे माँ उसे शर्मिंदा करने के लिए ही सुना कर कह रही हों।

सतविन्दर सोचने लगा– ''माँ ठीक ही तो कहते हैं। हमारे विज्ञान शिक्षक भी तो परसों यही बात बता रहे थे कि यदि पानी की समस्या ऐसे ही यथावत रही तो जीवन कठिन हो जाएगा। मैंने क्रोध में आकर परमजीत माली से बदला लेकर ठीक नहीं किया। ऐसा करके मैंने परमजीत का नहीं किन्तु अपने समाज का नुकसान किया है। परमजीत तो अपनी जगह ठीक थे और प्राचार्य जी भी। चूक तो मेरी ही थी। मैं क्यारियों में न घुसता तो क्यों दण्ड होता, क्यों डाँट मिलती?''

सतविन्दर माँ से बोला– ''बेबे! मैं अभी आया। मुझे एक अति आवश्यक कार्य स्मरण हो आया है।''

माँ ने हैरानी से पूछा– ''इस समय रात को कौन-सा काम याद आ गया है तुझे?'' बताकर तो जा कहाँ चला?''

''बेबे! आकर बतलाता हूँ। बस कुछ ही समय में आता हूँ।'' यह कहकर सतविन्दर घर से तेजी से भाग निकला। भागता-भागता वह शाला की दीवार पर आ चढ़ा। फिर शाला के परिसर में छलांग लगा दी। उसने देखा, तीनों टोंटियों में पानी अभी भी तेजी से बह रहा था। कुछ क्यारियाँ तो पानी से नाको-नाक भर चुकीं थीं। कुछ पौधे उखड़कर पानी की सतह पर तैर रहे थे।

सतविन्दर ने फटाफट टोंटियों को बंद किया। फिर उखड़े हुए पौधों को पुन: रोपने लगा। जिन क्यारियों के पौधे अधिक पानी के कारण डूबे हुए थे, सतविन्दर ने उनका पानी कुछ ही समय में बाहर निकाल दिया।

घर आकर सतविन्दर ने माँ को सारी बात सच-सच बताई तो माँ बोलीं– ''पुत्तर! क्यों, मैंने तुम्हारा चेहरा पहले ही पढ़ लिया था न कि आवश्यक कोई बात है। जो काम तुम पहले करके आए थे, वह बहुत बुरा था। उस बुरे काम ने ही तुम्हारे मन का चैन चुरा लिया था जिसके कारण तुम उखड़े-उखड़े से लग रहे थे किन्तु अब तुम जो काम करके आए हो, वह बहुत ही अच्छा है। तुमने ऐसा करके न केवल कीमती पानी को बेकार बहने से बचाया बल्कि नन्हे-नन्हे पौधों के रूप में वनस्पति को बचाकर भी प्रशंसनीय कार्य किया है। यदि आज टोंटी में पानी न जाता तो तुम्हें पानी का महत्व कैसे पता चलता? और सुन, तुम्हारे चेहरे की चमक भी लौट आई है।''

कुछ दिनों बाद सतविन्दर प्रात: शाला जा रहा था। मार्ग में उसने एक स्थान पर देखा, एक टोंटी से तेजी से पानी बेकार बह रहा था। लोग वहाँ से निकलते जा रहे थे किन्तु किसी के पास उस टोंटी का बेकार बह रहा पानी बंद करने का समय नहीं था।

सतविन्दर ने टोंटी बंद करने का प्रयास किया किन्तु वह खराब हुई पड़ी थी। फिर उसने कुछ दूर पड़ा एक कपड़े का टुकड़ा उठाया और एक मजबूत रस्सी की सहायता से टोंटी पर कस कर बाँध दिया। पानी बहना बंद हो गया।

''शाबास!'' अचानक ही किसी ने सतविन्दर की पीठ थपथपाई।

सतविन्दर ने एकदम घबराकर पीछे मुड़कर देखा, उसके शाला के प्राचार्य साहब थे।

''सतविन्दर! तुम तो बहुत समझदार हो गए हो।'' प्राचार्य जी की यह बात सुनकर सतविन्दर को लगा जैसे उसका कद ऊँचा हो गया हो।

– पटियाला (पंजाब)

लघुकथा

वो कहाँ जाएँ?

– सौ. पद्मा चौगांवकर

एक धनी किसान अपनी खेती स्वयं देखता, पर खेती का सारा काम बहुत थकाने वाला होता– इसलिए कई बार वह परेशान हो जाता।

एक बार एक बड़ी कंपनी 'एग्रोबेटिक' का एजेंट उसके पास आया। उसने कृषि कार्य के लिए किराए पर रोबोट सेवा देने की बात कही। निंदाई से लेकर फसल की कटाई तक रोबोट, पूरी कुशलता के साथ काम करेंगे। आसपास के कई किसान भी इस योजना का लाभ लेने को उत्सुक हैं– यह जानकार वह प्रसन्न हुआ। परन्तु रोबो यंत्र का किराया बहुत अधिक था। इसके लिए बैंक से भारी कर्जा लेने को वह तैयार हो गया। सोचा– सारी झंझट समाप्त बस केवल लाभ ही लाभ।

रोबो अपनी कृत्रिम बौद्धिक और यांत्रिक शक्तियों से खेतों में काम पर लग गए। देखते ही देखते सूखी जमीन खोदकर रख दी। वर्षा आने में अभी देर थी। पर कम्पनी के रोबोट द्वारा कृत्रिम वर्षा भी कराकर, बीज बो दिए गए, किसान जागते हुए सुंदर स्वप्न देखने लगा था। शीघ्र ही बीजों के अंकुर आएँगे। खेत लहलहाएँगे। दोगुनी–चौगुनी फसल! और धन वर्षा होगी। कि अचानक किसी के पुकारने से उसका सपना टूटा देखता है कि उसके खेत में हमेशा काम करने वाले मजदूर आ खड़े हुए हैं– रामा, जमना, सत्तू और किसना। सारे के सारे बोले– ''मालिक! इस बार याद नहीं किया? बुआई तो होनी होगी? खेत किसने तैयार किए?'' रामा बोला– ''दो दिन पहले

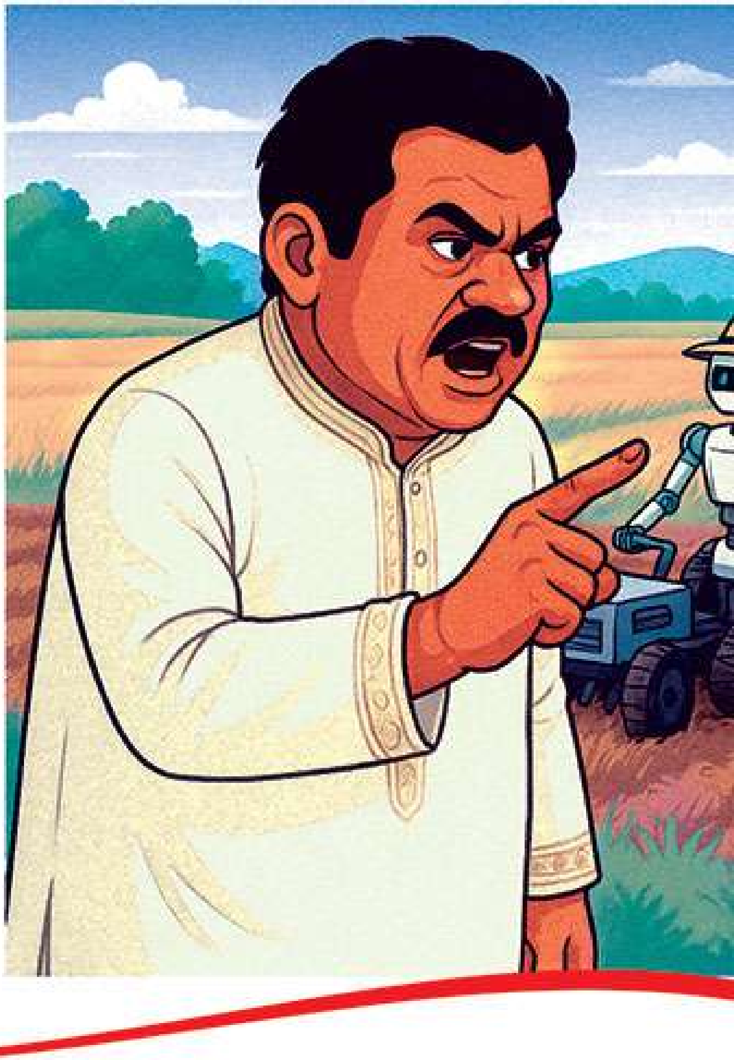

तो देख गए थे हम लोग, किसने किया ये काम, इतना जल्दी?''

मालिक की बात उनके कानों में पड़ी– ''अब खेतों को तुम्हारी आवश्यकता नहीं होगी। रोबोट करेगा सारे काम।''

सारे मजदूर थोड़ी देर सकते में खड़े रह गए– क्या करते? दुखी होकर धीरे–धीरे चले गए।

किसान प्रसन्न था– बलाएँ टली!! इन्हें बुलाकर लाओ, पैसा भी दो और नखरे उठाओ। अब इनकी क्या आवश्यकता? वह आराम से वहाँ पड़ी चारपाई पर लेट गया। और झपकी लेने लगा। तभी एकाएक उसे सिसकियों की आवाज सुनाई दी।

''कौन सिसक रहा है?'' उसने आस–पास देखा। अधजगा–सा फिर लेट गया।

आवाज आई– ''मैं रो रही हूँ– तुम्हारे खेत की जमीन।''

सोचो, क्या बुरा था। तुम मेहनत से खेती कर रहे थे? रामा, सत्तू, हरिया तुम्हारे खेत में काम कर, पसीना बहाकर अपने लिए कुछ कमा रहे थे? लहलहाते खेत मुझे भी रोमांचित कर जाते। फसल पाकर तुम भी तो सारे वर्षभर के लिए निश्चिंत हो जाते! कर्ज होता भी तो थोड़ा।

अब मुझ पर यंत्रों की यातना है। देख रही हूँ– खेत का काम शीघ्रता और गुणवत्ता के साथ हो रहा है। देर–सबेर तुम धनवान भी हो जाओगे। पर जो दूसरे लोग मुझ पर आश्रित हैं, उनका क्या? मैं तो सबकी माँ हूँ। उनके लिए दुखी हूँ।''

धनी किसान हड़बड़ाकर नींद से जागा– ''मेरी माँ! ये तो मैंने सोचा ही नहीं।''

''तो अब भी सोच लो.... जड़ों से जुड़ने की बात, बीते दिनों की ओर लौट चलो।''

– गंजबासौदा (म. प्र.)

कविता

भारत पर आँख उठाना मत

सीमाओं पर अपनी क्षमता से,
गर्व शत्रु का चूर किया।
आतंकी काली छाया,
हित अभियान बड़ा 'सिन्दूर' किया।।
तुम धर्म पूछकर मार रहे,
निज धर्म जानते हैं हम भी।
आसुरी वृत्ति को शस्त्र–दण्ड,
का कार्य जानते हैं हम भी।।
भारत पर आँख उठाना मत,
भारत का प्रण यह सच्चा है।
हर दुश्मन के लिए काल,
भारत का बच्चा–बच्चा है।।
है धन्य सैन्य बल भारत का,
नभ जल थल चैतन्य सजग।
भारत के शौर्य और संयम
का परिचय फिर जाने यह जग।।

कचरे का साम्राज्य

– डॉ. पूजा अलापुरिया 'हेमाक्ष'

सूत्रधार– वैष्णवी एवं आलोक

पात्र– रेनू
विशाल
माँ

कचरा– प्लास्टिक

(वैष्णवी और आलोक मंच पर आते हैं और सभी दर्शकों को संबोधित करते हुए कहते हैं।)

वैष्णवी– नमस्ते मित्रो!

आलोक– कैसे हो?

वैष्णवी– खुशहाल और स्वस्थ तो हो ना?

आलोक– हमारा आज का विषय है....?

वैष्णवी– अरे आलोक! सबसे महत्वपूर्ण प्रश्न तो रह ही गया।

(दर्शकों से कहती है) हँसते हैं न आप? हँसना ही चाहिए।

आलोक– (मासूमियत भरे भाव से) तो फिर हँसते ही रहेंगे क्या? आस–पास का परिसर भी तो साफ रहना चाहिए, ना कि हँसते ही रहना चाहिए।

क्या आज अपने आस–पास (इस नाट्यगृह में) मनोहारी अनुभव देखने को मिलता है? जहाँ भी देखो, सभी ओर कचरा–ही–कचरा देखने को मिलता है।

मुझे तो ऐसा लगता है कि एक दिन ऐसा आएगा जब मानव जीवन नहीं, बल्कि **सर्वत्र कचरा ही राज** कर रहा होगा। भगवान न करें ऐसी दुर्दशा हमें देखने को मिले।

वैष्णवी– यह तो कुछ भी नहीं। आज का समाज तो ऐसा है कि रास्ते पर फैला हुआ कचरा उठाने की जगह उसे और बढ़ाते हैं।

कचरे को देख कहते हैं, ''कैसा कचरा?'' हमने थोड़े ही फैलाया है जो हम उठाएँ। महानगर पालिका के कर्मचारी देख लेंगे।''

लोग तो यही सोचते हैं, ''हम भले हमारा काम भला।'' कभी किसी ने ऐसा विचार किया है क्या? कचरा किसी ने भी डाला हो, लेकिन ये देश, ये समाज और ये दुनिया तो मेरी ही है।

आलोक– अम्म्म्म... वर्ष के तीन सौ पैंसठ दिनों में से केवल दो दिन गणतंत्र दिवस और स्वतंत्रता दिवस के दिन ही हम एकदम गर्व और अभिमान से

कहते हैं ये देश मेरा है, यह समाज मेरा है, यह मातृभूमि मेरी है। लेकिन जब अपने देश के प्रति कोई जिम्मेदारी निभाने का समय आता है, तो हम कहते हैं कि कौन-सा देश, कौन-सा समाज... ?

वैष्णवी– देखा जाए तो यह सोचने की बात है न? हम अपना घर एकदम सुंदर रखने की आशा करते हैं और रखते भी हैं। लेकिन यह पृथ्वी भी तो अपना घर ही है। यह हम क्यों भूल जाते हैं ?

अब आप ही बताइए कि क्या कचरा केवल हमारा ही परिसर गंदा करता है? आपको पता है क्या? ये कचरा ही नहीं बल्कि हम किस तरह का भोजन करते हैं, वह हमारे लिए कितना स्वास्थ्य-वर्द्धक है और हमारे किस प्रकार काम आता है इसके बारे में तो हम विचार ही नहीं करते।

वैष्णवी– वो इंग्लिश में कहते हैं न– 'एक्शन लाउडर देन वर्डस्' कथनी से अधिक, करके दिखाने का महत्व अधिक होता है। अब हम बोल-बोलकर भी कितना बोल सकते हैं। अब आप ही देख लीजिए। हम समता विद्यालय के छात्र लेकर आए हैं एकदम अलग कहानी।

(हर दिन की तरह आज भी रेनू और विशाल शाला से घर पहुँचते हैं।)

रेनू और विशाल– माँ! हम आ गए।

माँ– आ गए मेरे बच्चे। आज का दिन कैसा रहा? और क्या नया सीखा आज शाला में?

विशाल– आज तो खूब पक गया, जो भी कक्षा में आता, वही कचरा उठाने के लिए कहता, हाथ धोने के लिए कहता, बार-बार खाने से पहले, क्या हाथ धोना? सुबह-सुबह आधा ही सही, नहाकर तो जाता हूँ।

(रेनू हँसती है।)

रेनू– माँ! इस विशाल का कुछ मत सुनो! बल्कि आज तो हमने बहुत मस्ती की, मैदान में खेले, हमारी कक्षा कितनी सुंदर दिख रही थी पता है क्या?

माँ– चलो, अब हाथ-पैर धोकर खाने के लिए बैठो।

विशाल– (स्वयं से) अरे यार! माँ भी हाथ धोने के लिए कह रही है।

(रेनू और विशाल खाना खा लेते हैं।)

माँ– चलो बच्चो! बहुत देर हो गई है, अब सो जाओ।

रेनू– हाँ माँ! चल विशाल अब सो जा।

विशाल– तू सो जा।

रेनू– (चिढ़ाते हुए) आज जो सिखाया है ध्यान रखना।

विशाल– (खिसियाते हुए) रेनू! सो जा न तू।

(रेनू सो जाती है और कुछ ही देर में विशाल भी सो जाता है। आँख लगते ही विशाल गहरी नींद में पहुँच गया और सपनों की दुनिया में पहुँच गया।)

विशाल का सपना

कचरा१– अरे! प्लास्टिक किधर है तू?

प्लास्टिक– आई! भैया रुको आती हूँ। लोगों ने मुझे ठीक से कचरे के डिब्बे में नहीं लगाया इसलिए नीचे गिर गई और हवा उधर उड़ा ले गई।

कचरा २– अरे मित्रो! किधर हो तुम सब? मैं वेफअर्स का कचरा। पहचाना क्या? अभी-अभी उस बच्चे ने मुझे इधर फेंक दिया।

कचरा १– आओ, तुम्हारा स्वागत है। हमारे साम्राज्य में हर दिन नए सदस्य जुड़ रहे हैं। इस प्रकार बढ़ते साम्राज्य को देख बहुत प्रसन्नता होती है।

कचरा ३– इन मनुष्यों के कारण से हमारे राज्य का कितना विस्तार हो रहा है। कितनी अच्छी बात है न!

कचरा ४– थोड़ी देर और रोको। और भी कोई आ जाएगा।

कचरा ५– मैंने कहा था न, देखो तुरन्त आ गया हमारा नया मित्र।

विशाल– अरे-अरे! कौन हो तुम सब? इधर इतनी भीड़ क्यों जमा कर रखी है?

कचरा– अरे! हम कचरा हैं। देख तुझे हमें उठाने में कष्ट होता है न। देख हमारा साम्राज्य!

विशाल– कैसा साम्राज्य? हम तो तुम्हें सुबह-सुबह जला देते हैं। बड़े आए साम्राज्य वाले!

कचरा (सब)– जोर-जोर से हँसने लगते हैं- हा-हा-हा....।

विशाल– दाँत क्या दिखा रहे हो? सच है वही बोल रहा हूँ। पागल कहीं के?

कचरा– सोचो तो! सुबह की हवा स्वास्थ्य-वर्द्धक होती है। निर्मल होती है। होती है न?

विशाल– हाँ तो?

कचरा– अरे! हमें जलाने पर वह निर्मल हवा दूषित हो जाती है।

विशाल– वह कैसे?

कचरा– हमें जलाने पर विविध तरह की विषैली और प्राणघातक गैस वातावरण में मिल जाती है। और जब तुम साँस लेते हो तो वही विषैली हवा तुम्हारे शरीर में प्रवेश करती है। और तुम बीमार पड़ जाते हो। कैसा आनंद आता है न?

(कचरे की बात सुनकर विशाल नि:शब्द हो जाता है।)

कचरा– चल अब हमें अपना साम्राज्य और भी बढ़ाना है। तेरे से बात करने का समय नहीं है हमारे पास।

विशाल– (स्वयं से ही) ये लोग झूठ बोल रहे हैं। ऐसा भी कभी होता है क्या?

(विशाल जैसे-जैसे आगे बढ़ता है उसे और भी कचरा फैला हुआ दिखाई देता है।)

विशाल– इतना-सा कचरा, लेकिन नखरे देखो इनके।

(विशाल जैसे-जैसे आगे बढ़ता है उसे कचरा होने की समस्या समझ आने लगती है। वह घबरा जाता है।)

विशाल– अरे बाप रे! मुझे तो लगता था कचरा बहुत कम रहता है, लेकिन जहाँ देखो वहाँ, सब जगह कचरा-ही-कचरा है। इस तरह तो प्राकृतिक सौंदर्य दिखाई देना ही बंद हो जाएगा।

(विशाल घबरा जाता है। और प्रकृति पर होने वाले परिणामों के बारे में सोचने लगता है। थोड़ी देर में विशाल से मिला हुआ कचरा अलग-अलग तरह के

कचरों के साथ विशाल को मिलता है।)

विशाल– तुम फिर आ गए।

कचरा– हाँ! और देखो अपने साथ अपने जोड़ीदारों को भी लेकर आया हूँ। अब देखना इंसानों की सहायता से ही हम अपना साम्राज्य कैसे बढ़ते हैं।

कचरा २– हमने लगभग सब जगह प्रदूषण कर दिया है।

कचरा ३– लगभग क्या? मुझे तो लगता है हमने सब कुछ प्रदूषित कर दिया है।

कचरा १– (गुस्से में) तुम दोनों को कितनी बार समझाया है, 'प्रदूषण नहीं कहते।'

कचरा २– क्षमा करना मित्र! स्मरण हो आया। हमने अपना साम्राज्य फैला लिया है।

कचरा १– शाबाश! बस ऐसे ही कार्य करते जाओ। एक दिन ये पूरी धरती हमारी होगी।

(इतने में नदी इठलाती हुई आती है।)

नदी– मुझे देखो! मैं कितनी ऽऽऽऽऽ साफ-सुथरी हूँ– निर्मल हूँ। स्वच्छ हूँ।

कचरा १– अरे-अरे! यह कैसे बच गई? चलो अपना काम प्रारंभ करो।

(कुछ ही देर में कचरा नदी को दूषित कर देता है। नदी बेचारी वहाँ से निकल जाती है। विशाल हैरान हो जाता है और केवल देखता ही रह जाता है। थोड़ी देर में एक नए तरह का कचरा वहाँ आता है।)

कचरा ३– कौन है रे बाबा तू?

जर्म्स– अरे! मैं जीवाणु हूँ। अँग्रेजी में मुझे जर्मस् कहते हैं।

कचरा– तू हमारे किस काम का रे?

जर्म्स– अरे! जब बच्चे खेलते हैं न, तो मैं उनके हाथों पर जाकर बैठ जाता हूँ।

कचरा– फिर उससे क्या होता है?

जर्म्स– फिर जब वे भोजन करते हैं न तो मैं उनके पेट में प्रवेश कर जाता हूँ। पेट में जाने के बाद मैं अंदर नाचता हूँ, गाता हूँ जो मन करता है सब करता हूँ। मेरी बदमाशियों से बच्चे का पेट जोर से दुखने लगता है। और मुझे बहुत मजा आता है।

विशाल– क्याऽऽऽ!

जर्म्स– अरे तू! तुझे याद है कल तेरा पेट दुख रहा था।

विशाल– हाँ, दुख तो रहा था। तुझे कैसे पता?

जर्म्स– तू ठहरा आलसी। खाने से पहले तू हाथ धोता नहीं, बस फिर क्या था मेरे मित्र तेरे हाथों पर बैठे हुए थे। तेरे हाथ न धोने की आदत के कारण से, वे तेरे मुँह के द्वारा अंदर प्रवेश कर गए। अंदर जाने के बाद वे डिस्को कर रहे थे, तुझे लग रहा था तेरा पेट दुख रहा है, पागल कहीं का।

(विशाल आश्चर्य से उसे देखता है।)

विशाल– कितने गंदे हो न तुम लोग और बुरे भी। तुम्हारे कारण ही कल मेरा पेट कितना दुखा। तुम्हें पता है कितना कष्ट होता है?

जर्म्स– कष्ट हमें भी होता है। कल तुमने चिकित्सक के पास जाकर मेरे मित्रों को मार दिया न! उस कष्ट का बदला लेने आया हूँ मैं।

(विशाल घबरा कर भाग जाता है। कचरा और कीटाणु एक साथ नाचने लगते हैं।)

सब एक साथ– देखो रे देखो! हम कितना फैल गए हैं। धींचक-धींचक!

(भागते-भागते विशाल एक सुंदर और साफ-सुथरे स्थान पर पहुँच जाता है। उधर की स्वच्छता देखकर मन-ही-मन में कचरा और कीटाणु को चिढ़ाने लगता है। लेकिन उसका आनंद कुछ देर का ही होता है। क्योंकि उसके पीछे-पीछे कचरा और कीटाणु नाचते हुए आ जाते हैं। विशाल छुप जाता है।)

(कचरा वहाँ पहुँचकर एक-एक करके उस सुंदर और स्वच्छ स्थान को दूषित और गंदा कर देते

हैं।)

कचरा १– मेरे पास इतना है।

कचरा २– मैं इतना दे सकता हूँ।

(ऐसे एक–एक करके सब अपने पास वाला कचरा फेंकना प्रारंभ कर देते हैं।)

कचरा ४– अरे! मेरे पास का सब कचरा समाप्त हो गया।

(कचरे की भीड़ में से एक कचरा आगे आता है।)

कचरा ५– हे! मेरे पास है। देख मैं उधर–उधर और इधर भी फैला हूँ।

कचरा १– अरे हम बर्बाद हो गए। हम सब समाप्त हो गए।

(इतनी देर में कचरों का राजा जोर–जोर से गर्जना करते हुए आता है।)

कचरे का राजा– कौन है इधर? जो अपने समाप्त होने की बात कर रहा है?

सब कचरे– प्रणाम महाराज!

राजा– (क्रोधित होकर) फिर यदि किसी ने अपने समाप्त होने की बात की या घोषणा की तो मुझसे बुरा कोई न होगा। स्मरण रहे।

सब कचरे– जी महाराज!

(कचरों का राजा अपने पास का सारा कचरा सब स्थान पर फैलाता है। विशाल जो डर से छुप कर बैठा था। उसे इस बात पर क्रोध आने लगता है। उसे अपनी गलती का अनुभव हुआ। उसने अपनी गलती सुधारने का दृढ़ निश्चय किया। थोड़ा साहस करके कचरों के राजा के सामने आता है।)

विशाल– ओ कचरों के राजा! हमने ही तुम्हें सब जगह फैलाया है। और अब हमें तुम्हारे होने के परिणाम का अनुभव हो गया है। अब तुम देखते रहे हम तुम्हारा समापन कैसे करते हैं।

(राजा जोर–जोर से हँसने लगता है।)

राजा– तू अकेला क्या कर लेगा?

(विशाल राजा की बातों पर ध्यान न देते हुए वहाँ फैले कचरे को साफ करने लगता है। उसको देख रेनू भी उसकी सहायता करने लगती है। विशाल के सपने में उसकी पहचान के तथा अजनबी लोग साफ–सफाई में उसकी सहायता करने लगते हैं। देखते–ही–देखते कचरा डर जाता है। कचरों का राजा और सभी कीटाणु भी वहाँ से भागने लगते हैं। विशाल यह देखकर बहुत प्रसन्न हो जाता है। अचानक विशाल की आँख खुल जाती है।)

माँ– विशाल और रेनू उठो। चाय–नाश्ता कर लो और पढ़ाई करो।

विशाल और रेनू– हाँ माँ!

(आज विशाल ने किसी के कहे बिना ही अपने हाथ धो लिए। आस–पास फैला कचरा साफ कर दिया। नाश्ता करके रेनू और विशाल पढ़ने चले गए। विशाल ने अपने स्वप्न के बारे में अपने मित्रों को बताया और स्वस्थ रहने के लिए अपना परिसर स्वच्छ रखने के लिए कहा।)

– नवी मुंबई (महाराष्ट्र)

खेद है

'देवपुत्र' के पुस्तक परिचय स्तंभ में वर्षभर में जिन पुस्तकों का परिचय प्रकाशित होता है उनमें से एक सर्वश्रेष्ठ कृति का चयन 'केशर पूरन स्मृति पुरस्कार' हेतु किया जाता है। वर्ष २०२४ के इस पुरस्कार के लिए श्रद्धेय प्रकाश 'मनु' जी की पुस्तक का चयन हो गया जिसकी घोषणा मई २०२४ के अंक में की गई।

श्री. प्रकाश मनु जी ने इसे स्वीकार करने में असमर्थता व्यक्त की है। बिना सहमति उनकी कृति को पुरस्कृत घोषित करने से उन्हें जो आत्मिक कष्ट हुआ है उसके लिए खेद प्रकट करता हूँ। **–सम्पादक**

चित्रकथा- समझ - संकेत
ए भाई !.. क्या मुझे साथ ले चलेंगे ?
बैठो.
..मुझे चिड़ियाघर जाना है.
बताने की जरूरत नहीं है..
..यह तो मैं तुम्हें देखकर ही समझ गया था.

जीवन पेड़

– प्राजक्ता देशपाण्डे

गर्मी की छुट्टियाँ आ गई थीं और बच्चों को शाला की सभी पढ़ाई से छुटकारा मिल गया था। गाँव में रहने वाली मीरा और उसके मित्र मोहन और सिया, समीर मारे प्रसन्नता के झूम रहे थे, वे तीनों हर दिन कुछ नया करने का सोचते थे। गाँव में एक पुराना और विशाल पेड़ था, जिसे 'जीवन पेड़' कहा जाता था। गाँव के लोग मानते थे कि इस पेड़ से ही गाँव में खुशहाली और समृद्धि आती है।

एक दिन बच्चे पेड़ की छाँव के नीचे खेल रहे थे। तभी एक जीप वहाँ आकर रुकी। उसमें से २–४ लोग उतरे और मेजरिंग टेप से स्थान को नापने लगे। समीर ने मोहन से कहा– ''मुझे लगता है कि यहाँ कुछ बनने वाला है।''

''चल, चलकर पूछते हैं।'' मीरा ने कहा।

''काका! क्या यहाँ कुछ काम होने जा रहा है?'' सिया ने पूछा।

''हाँ बच्चो! यहाँ तुम सबके लिए बड़ा–सा मॉल बनेगा उसमें मल्टीप्लेक्स, गेमिंग जोन, फन जोन, फूड जोन होगा।'' हँसते हुए मोटे काका बोले। सभी बच्चे मॉल की बात सुन प्रसन्न हो गए।

थोड़ी देर रुककर वे लोग पुन: चले गए।

''हम्म! मतलब इसके लिए 'जीवन पेड़' को काट दिया जाएगा।'' बुदबुदाते हुए मोहन ने कहा।

तब तक रिया और बाकि सभी सूरज की किरणों से बचने के लिए पेड़ के नीचे बैठ गए। पेड़ की छाँव में बैठते ही उन्हें ठंडक अनुभव होन लगी। रिया ने कहा– ''वाह! इस पेड़ के नीचे कितना अच्छा आनंद हो रहा है, है ना?''

रिया ने सोचा और कहा– ''ये हवा तो ताजगी से भरते हैं, हमें ऑक्सीजन देते हैं और पर्यावरण को

साफ रखते हैं।''

सिया, जो रिया की मित्र थी, बोली–''सही कहा तुमने, रिया। पेड़ बादलों को आकर्षित करते हैं, जिससे वर्षा होती है और हमारे पास पानी की कमी नहीं होती। वे मिट्टी को भी पकड़ते हैं और बाढ़ को रोकने में सहायता करते हैं।'' तभी, रिया ने ऊपर की ओर देखकर कहा– ''देखो! ये पक्षी भी पेड़ पर रहते हैं। और अपना घर बनाते हैं। पेड़ न केवल हमें, बल्कि जानवरों और पक्षियों को भी आसरा देते हैं।''

उनकी बातचीत मोहन ध्यान से सुन रहा था। उसने कहा– ''तो तुम सबकी पेड़ों से पक्की मित्रता है ना?''

''हाँ बिलकुल! पक्की वाली मित्रता।'' तभी ने एक सुर में कहा।

एक सप्ताह बाद वही लोग आए तो देखा कि बच्चे, बड़े, बूढ़े सभी पेड़ को घेर कर खड़े हैं।

''आप लोग क्या चाहते हो? हमें हमारा काम करने दो, हट जाओ यहाँ से।'' मोटे काका ने क्रोधित होकर कहा।

''जब तक हमें लिखित रूप में इस बात का आश्वासन नहीं दिया जाएगा की मॉल बनाने के लिए यह पेड़ नहीं कटेगा, तब तक हम नहीं हटेंगे।'' गाँव के मुखिया ने कहा।

सभी बच्चों ने पेड़ के बारे में सुंदर पोस्टर बनाए और गाँव के प्रत्येक घर में पेड़ लगाने की प्रार्थना की। उन्होंने गाँव में एक बड़े कार्यक्रम का आयोजन किया जिसमें सभी को पेड़ों के महत्व के बारे में बताया गया। तो ये सभी 'पेड़ बचाओ' आंदोलन में थे।

मुखिया के साथ गाँव के सभी लोगों की मेहनत रंग लाई आखिरकार यह तय हुआ कि किसी भी पेड़ का नुकसान किए बिना ही काम प्रारंभ किया जाएगा।

इसके बाद बच्चों और बड़ों ने मिलकर वर्षा के दिनों में आसपास के क्षेत्रों में पौधे लगाना प्रारंभ कर दिया। खुशहाली लौट आई और पेड़ फिर से हरे–भरे हो गए और बच्चे मारे प्रसन्नता के झूम उठे।

– इन्दौर (म. प्र.)

शिव मोहन यादव के द्वारा 'देवपुत्र' का अप्रैल २०२५ का अंक प्राप्त हुआ। अंक पर शुरुआत दृष्टि डाली।

अंक पहले से और भी अच्छा हुआ है। डॉ. केशव राव बलिराम हेडगेवार जी के बारे में संपादकीय में अच्छी जानकारी है। डॉ. साहब पर उमेश चौरसिया जी का नाटक अच्छा लगा।

सभी रचनाएँ पठनीय हैं। सुंदर अंक के लिए बधाई भाई साहब।

आदरणीय कृष्ण कुमार अष्ठाना जी वाला अंक देखा। श्री. अष्ठाना जी से मेरा संबंध इतना था, उन्होंने उत्तर प्रदेश हिंदी संस्थान में आचार्य कृष्ण विनायक फड़के बाल साहित्य समीक्षा सम्मान उनकी कलम से मिला था।

अष्ठाना जी संपादक, लेखक होने के साथ–साथ एक अच्छे व्यक्ति भी थे। उनके बारे में विस्तृत जानने का अवसर 'देवपुत्र' ने दिया। इसके लिए बधाई भाई साहब।

– डॉ. उमेशचन्द्र सिरसवारी
नई दिल्ली

आलेख–बंकिम जयन्ती २६ जून

राष्ट्रगीत वन्देमातरम् के रचयिता बंकिमचन्द्र चट्टोपाध्याय

– विजयसिंह माली

वन्देमातरम्
सुजलाम सुफलाम् मलयजशीतलाम्
शस्य श्यामलाम्। मातरम्। वन्देमातरम्
शुभ्र ज्योत्सना पुलकित यामिनीम्
फुल्ल कुसुमित द्रुमदल शोभिनीम्
सुहासिनीम् सुमधुरभाषिणीम्
सुखदाम् वरदाम्। मातरम्। वन्देमातरम्

राष्ट्रगीत वन्देमातरम् भारतीय स्वातंत्र्य युद्ध का बीज मंत्र है जिसका उद्घोष करते हुए असंख्य देशभक्त क्राँतिवीर स्वातंत्र्य सैनिक फाँसी के फंदे पर हँसते हँसते चढ़ गए। इस देश के राष्ट्रजीवन में वन्देमातरम् को श्रीमद् भगवत गीता जैसा असाधारण महत्व व स्थान प्राप्त हुआ है। वन्देमातरम् का उद्घोष देशभक्ति की गर्जना समझी जाती है। राष्ट्रगीत वन्देमातरम् के रचयिता थे बंकिमचन्द्र चट्टोपाध्याय।

बंकिमचन्द्र जी का जन्म बंगाल के चौबीस परगना जिले के कांतलपाड़ा गाँव में २७ जून १८३८ को विद्वान ब्राह्मण परिवार में हुआ था। इनके पिता यादव चन्द्र मिदनापुर के डिप्टी कलेक्टर थे। माता बड़ी स्नेहमयी साध्वी स्त्री थी। बचपन से ही रामायण–महाभारत की कहानियों ने इनके चरित्र निर्माण में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई। इनकी शिक्षा मेदिनीपुर में ही आरम्भ हुई।

ये बड़े मेधावी छात्र थे। इनकी बुद्धिमत्ता से लोग बड़े प्रभावित होते थे। शालान्त परीक्षा उत्तीर्ण कर उन्होंने हुगली के मोहसिन कॉलेज में प्रवेश लिया। कॉलेज की प्रत्येक परीक्षा में वे प्रथम श्रेणी से उत्तीर्ण हुए।

खेलकूद की अपेक्षा उन्हें पुस्तकों से अधिक लगाव था। संस्कृत में इनकी काफी रुचि थी। वर्ष १८५६ में उन्होंने कोलकाता के प्रेसीडेन्सी कॉलेज में प्रवेश किया। बी. ए. उत्तीर्ण कर ये डिप्टी कलेक्टर बन गए।

इस बीच कानून की भी परीक्षा पास कर ली। तत्पश्चात् इन्हें डिप्टी मजिस्ट्रेट बनाया गया। बंकिमचन्द्र बड़े सजग व स्वाभिमानी अधिकारी थे। इसके कारण नौकरी के समय ये कभी भी एक ही स्थान पर टिक न सके। परिश्रम के बाद भी ऊँचे पद तक नहीं पहुँच पाए। ३२ वर्ष तक सरकारी नौकरी करके उन्होंने स्वैच्छिक सेवानिवृत्ति ले ली।

अपनी पत्नी राजलक्ष्मी देवी से उन्हें ३ पुत्रियाँ हुईं। जैसोर में इनका परिचय नामी बंगला नाटककार दीनबन्धु मित्र से हुआ। वे दोनों घनिष्ठ मित्र बन गए। अपनी प्रसिद्ध पुस्तक आनंद मठ उन्होंने अपने दीनबंधु मित्र को ही समर्पित की है।

बंकिमचन्द्र ने पहले कुछ कविताएँ लिखीं फिर अँग्रेजी में एक उपन्यास लिखा। इसके बाद अपनी मातृभाषा बंगाली में लिखना प्रारंभ किया। उन्होंने 'बंग–दर्शन' नामक मासिक पत्रिका चलाई थी। आनंद मठ उपन्यास उसी में प्रकाशित हुआ। बाद में वह १८८२ में पुस्तक के रूप में छपा इस उपन्यास में बंकिमचन्द्र को कीर्ति के शिखर पर पहुँचा दिया।

बंकिमचन्द्र की लेखन शैली से बंगला भाषा को नया गौरव मिला। बंकिम के उपन्यास पाठकों के लिए एक नई अनुभूति थे। बंगाल की जनता तो उनके पीछे दीवानी थी। उन्होंने कुल १५ उपन्यास लिखे। जिसमें आनंदमठ, देवी चौधरानी तथा सीताराम में उस समय की परिस्थिति का चित्र है। दुर्गेश नंदिनी, कपाल कुंडला, मृणालिनी, चन्द्रशेखर, राजसिंह

बहुत ही लोकप्रिय हुए। विषवृक्ष, इंदिरा, युगलांगुरिया, राधारानी, रजनी और कृष्णकांत की वसीयत में समाज की अच्छाइयों व बुराइयों का चित्रण हुआ है। वे उन महान लोगों में से थे जिन्होंने भारतीयों में स्वतंत्रता के लिए संघर्ष करने की प्रेरणा दी। उनके लेखन से राष्ट्रीयता का अर्थ लोग समझ सके। आनंदमठ राष्ट्रभक्ति पर लिखा शानदार उपन्यास है।

वर्ष १७७३ में बंगाल में पड़े भीषण अकाल के समय अँग्रेजी अत्याचार के विरुद्ध स्वराज्य के लिए जो आंदोलन हुआ, उसी की कहानी आनंदमठ में है। आनंदमठ देश के लिए जीने वाले और देश के लिए मरने वालों की कहानी है। सत्यानंद, भवानंद, महेन्द्र, जीवानंद, शांति आदि का मातृभूमि से प्रेम अनुकरणीय है। महेन्द्र से भवानंद कहते हैं कि **हमारी तो बस एक ही माँ है और वह है मातृभूमि। न हमारी और कोई माँ है, न कोई पिता, न पत्नी, न बच्चे, न घर द्वार। यह सुजलां सुफलां धरती ही तो हमारी माँ है**। आनंदमठ उपन्यास का गीत वन्देमातरम् १८७५ बंकिम चन्द्र की साहित्यलता पर खिला हुआ सर्वश्रेष्ठ पुष्प है। बंकिमचन्द्र की प्रतिभा का सम्पूर्ण सौन्दर्य सौरभ तथा सुधा की माधुरी इस काव्य में एकत्रित हुई है। यह गीत आगे चलकर देशभक्तों का कंठ हार बन गया स्वाधीनता संग्राम का शस्त्र बन गया।

बंकिमचन्द्र के जीवन काल में ही इसका अन्य भाषाओं हिन्दी, अँग्रेजी, तेलगु, कन्नड़ में अनुवाद हुआ। १८८३ में इसकी लोकप्रियता का लाभ उठाते हुए नेशनल थिएटर के अध्यक्ष केदारनाथ चौधरी ने इसका नाट्य रूपान्तरण किया। १८९६ के काँग्रेस अधिवेशन में सर्वप्रथम इसे गाया गया इसके बाद लगातार काँग्रेस के मंच पर मंगलाचरण के रूप में इसका गायन होता रहा। वह राष्ट्रीयता का प्रखर बोध जगाता रहा।

१९०५ के बंगाल विभाजन के समय

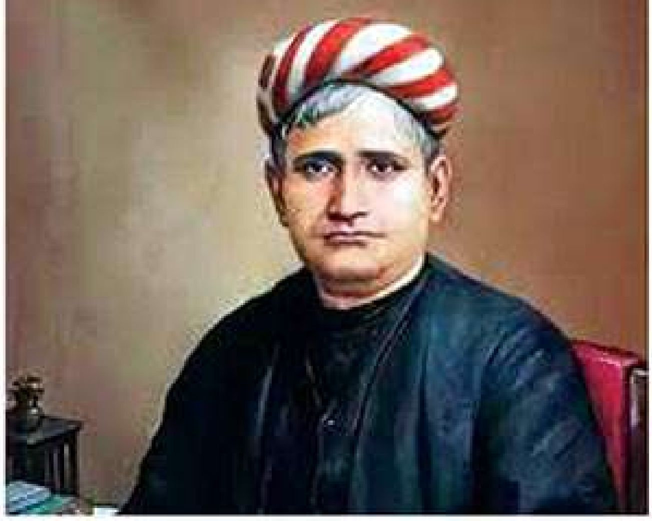

वन्देमातरम् का नारा सर्वत्र गूँज उठा। इसी प्रकार १८६५ में दुर्गेशनंदिनी का प्रथम प्रकाशन हुआ और २८ वर्षों में इसके १३ संस्करण निकालने पड़े। बंकिम चन्द्र के उपन्यास मनोरंजन के साथ-साथ लोगों की विचार शक्ति को भी जाग्रत करते थे।

स्वामी रामकृष्ण परमहंस भी इनके ऐतिहासिक उपन्यासों से प्रभावित थे, उन्होंने नरेन्द्र (विवेकानन्द) को भी इनके पास भेजा था।

बंकिमचन्द्र ने उपन्यास लेखन के साथ-साथ अन्य उत्कृष्ट ग्रंथ भी लिखे जैसे- कृष्ण चरित, धर्मतत्त्व, देवतत्त्व, श्रीमद्भगवतगीता पर विवेचन। अँग्रेजी और बांग्ला में उन्होंने हिन्दुत्व पर लेख लिखे, अँग्रेजी के ग्रंथों का भी उनका अध्ययन गहरा था, वे स्वयं एक सनातन हिन्दू परिवार के तत्त्व चिंतक थे। उनका लिखा 'कृष्णचरित' उत्कृष्ट रचना है।

बंकिमचन्द्र ने महाभारत, हरिवंश तथा पुराणों का गहराई से अध्ययन कर निष्कर्ष निकाला कि कृष्ण ने जो जीवन दर्शन दिया है, उससे बढ़कर दर्शन कोई नहीं दे सकता। कृष्ण पवित्रता व न्याय की साकार मूर्ति थे। उन्होंने स्वयं के लिए कुछ अपेक्षा नहीं की। कृष्ण-सा त्यागी महापुरुष दूसरा हो ही नहीं सकता, इसलिए उनका जीवन अनुकरणीय है, वह हमेशा प्रेरणा देता रहेगा।

बंकिमचन्द्र पत्रकार भी रहे। १८७२ में बंग

दर्शन पत्रिका प्रारंभ की। पत्रिका के पहले अंक में वे लिखते हैं– **जब तक हम अपनी भावनाओं को अपने विचारों को मातृभाषा में व्यक्त नहीं करेंगे, तब तक हमारी उन्नति हो ही नहीं सकती।**

बंकिमचन्द्र लोगों की विज्ञान के प्रति रुचि बढ़ाना चाहते थे। रवीन्द्रनाथ ठाकुर ने भी बंग दर्शन को आषाढ़ की प्रथम बौछार सा सुखद बताया। आषाढ़ की पहली बौछार से गर्मी से झुलते पेड़–पौधों को नवजीवन मिलता है। 'बंग दर्शन' ने जनता को प्रगति का नया रास्ता दिखाया, जनता उसके अंकों की प्रतीक्षा करती। उपन्यास, नाटक, काव्य, लेख–आलोचना के स्तंभ इसमें रहते। भावी पत्रिकाओं के लिए इसने मार्ग प्रशस्त किया।

बंकिमचन्द्र मातृभाषा के अनुरागी थे। उन्होंने अँग्रेजीयत के प्रति आकर्षित लोगों को लक्ष्य कर कहा– **अपनी भाषा से ही लोग प्रगति कर सकते हैं। हमें किसी भाषा से घृणा नहीं करनी है हमें तो अपना ज्ञान संग्रह बढ़ाने के लिए भाषा का प्रयोग करना चाहिए। पर यदि प्रगति करनी है तो एक ही मार्ग है अपनी भाषा का।**

बंकिमचन्द्र राष्ट्रभक्त थे। एक बार एक व्यक्ति कविता पठन के समय दरिद्र भारतीय का उपहास कर रहा था। तो बंकिम से ही नहीं रहा गया। वे वहाँ से तुरन्त चले गए।

रामकृष्ण परमहंस भी बंकिमचन्द्र की राष्ट्रभक्ति के कायल थे। एक बार रामकृष्ण ने उनसे पूछा– ''बंकिम! तुम किस कारण बंकिम (तिरछे) हो?'' बंकिमचन्द्र ने हँसते–हँसते उत्तर दिया– ''ब्रिटिशों की ठोकरों से।''

एक बार स्वामी विवेकानन्द ढाका गए। युवकों से बातचीत करते–करते एक युवक ने उनसे पूछा– ''हमें क्या पढ़ना चाहिए?'' तब स्वामी ने तुरन्त उत्तर दिया– ''बंकिम का साहित्य।''

सचमुच बंकिमचन्द्र की लेखनी ने भारतवर्ष में चेतना जाग्रत की। उनके 'वन्देमातरम्' ने भारत के इतिहास को नया मोड़ दिया। बंकिम चन्द्र अपने माता–पिता को देवतुल्य मानते थे। उनके चरण स्पर्श कर उनका चरणोदक लिए बिना वे कोई भी काम आरंभ नहीं करते थे।

परन्तु वे लेखन कार्य को अधिक समय नहीं दे पाए उनका स्वास्थ्य खराब हो गया, जीवन से मोह समाप्त हो गया। श्रीमद्भगवत्गीता के अध्ययन से उनका स्वभाव पूर्णत: परिवर्तित हो गया। ८ अप्रैल १८९४ को उनका देवलोक गमन हो गया। सचमुच वे ऋषि थे जिन्होंने हमें नए भारत का सृजन करने के लिए वंदेमातरम् का संजीवन मंत्र दिया।

बंकिमचन्द्र के इस संजीवन मंत्र को स्वर देते हुए हम भारत को परम वैभव के पथ पर ले जाए, यही बंकिम चन्द्र को सच्ची श्रद्धांजलि होगी।

– सादड़ी पाली (राज.)

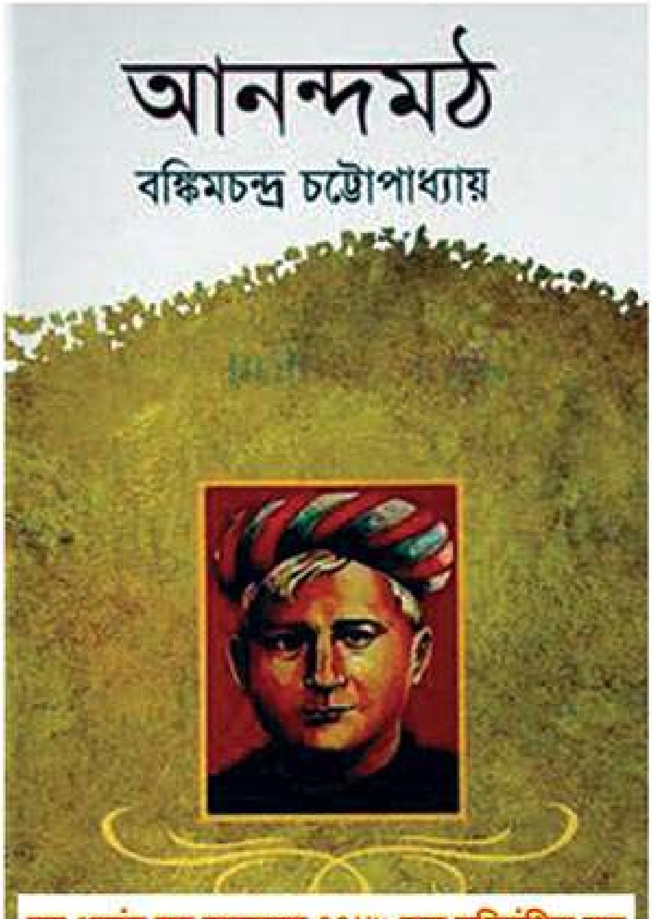

यह आनंद मठ उपन्यास १९४७ तक प्रतिबंधित रहा

लाल बुझक्कड़ काका के कारनामें

-देवांशु वत्स

खुशी की चाबी

– अलका सोनी

हर बार की तरह इस बार भी शनिवार रात खाने की मेज पर आशी और खुशी अगले दिन की सारी रूपरेखा बना रहे थे। रविवार को वे कहाँ घूमने जाएँगी। क्या-क्या करेंगी। इसकी योजना बना रही थीं वे। करे भी क्यों नहीं आखिर हफ्ते भर की पढ़ाई के बाद रविवार जो आता है।

जब बच्चों के साथ-साथ उनके पिताजी की भी छुट्टी रहती है। सुबह उनके साथ प्रात: की सैर पर जाना। फिर अपनी पसंद की साग-सब्जी व फल लाने बाजार जाना। लौटकर आने पर माँ के हाथों बनी गरमा-गरम पूरी और छोले खाना। दिनभर मस्ती करना, मिठाइयाँ खाना बस ऐसा ही तो रहता है उनका रविवार।

काफी सारी बातें और योजना करने के बाद दोनों बच्चे जल्दी सोने चले गए ताकि अगले दिन वे जल्दी से उठ सकें।

सुबह की खरीदी और नाश्ते के बाद पिताजी ने उन्हें तैयार होने को कहा। वे उन्हें साइकिलिंग के लिए ले जाने वाले थे। सर्दियों में धूप सेकते हुए साइकिल चलाने का अलग ही आनंद आता है। साइकिल चलाने की बात सुन आशी तो बहुत प्रसन्न हुई। लेकिन खुशी उदास हो गई। पिताजी ने जब प्यार से पूछा तो उसने कहा-

''वह साइकिल चलाने नहीं जाएगी। उसे डर लगता है।'' यह कहकर उसने अपने घुटने पर लगी चोट को दिखाया। हालाँकि चोट लगे हुए काफी दिन हो गए थे। घाव भी भर चुके थे। लेकिन साइकिल से गिरने का डर उसके बाद मन में कहीं बैठा था। लाख समझाने पर भी वह जाने के लिए तैयार नहीं हुई। हार कर पिताजी आशी को लेकर चले गए।

आशी को देखकर आसपास के बच्चे भी साइकिल चलाने आ गए। सभी शोर मचाते हुए साइकिल चला रहे थे। खुशी चुपचाप अंदर बैठी थी। उनकी आवाज सुनकर वह बालकनी में आ गई थी। नीचे बच्चे कभी हाथ छोड़कर तो कभी एक-दूसरे के साथ रेस लगाते हुए साइकिल चला रहे थे। यह सब देखकर खुशी का मन भी लालायित होने लगा। उसका मन भी करने लगा कि वह भी अपनी साइकिल निकाले और उन आजाद पंछियों की तरह उड़ जाए।

उसने एक बार चोट की तरफ देखा जो कि लगभग सूख चुका था। उसकी माँ जो अब तक उसे ध्यान से देख रही थी। उसके पास आई। प्यार से उसके बालों को सहलाते हुए उन्होंने कहा-

''बच्चे! जब हम कुछ नया काम करने या सीखने जाते हैं तो उसमें थोड़ा समय तो लगता ही है। साइकिल सीखते समय तो सभी बच्चे गिरते हैं। गिरने

के डर से वे साइकिल चलाना तो नहीं छोड़ देते।''

अपनी बात पूरी करते हुए वह बोलीं– ''थोड़ी चोट तो लगती है। लेकिन उसके ठीक होते ही, उसे भूलकर वे फिर प्रयत्न करते हैं सीखने का। इसी प्रकार एक दिन वे अच्छी प्रकार से साइकिल चलाने लगते हैं।''

इतना कहकर माँ ने उसे साइकिल की चाबी थमा दी और उसे बाहर जाकर साइकिल चलाने को कहा। अब तक अपने मन की इच्छा को दबा रही खुशी माँ के हाथों से चाबी लेकर हँसते हुए चल पड़ी अपनी साइकिल लेकर नई उड़ान भरने।

– बर्नपुर (पश्चिम बंगाल)

वृक्ष महिमा

दशकूपसमा वापी
दशवापीसमो ह्रदः।
दशह्रदसमः पुत्रो
दशपुत्रसमो द्रुमः।।

(शार्ङ्धर संहिता)

दस कुँओं सम एक बावड़ी, दस बावड़ियों समान एक सरोवर, दस सरोवरों सम एक पुत्र हितकारी है लेकिन एक वृक्ष दस पुत्रों के समान हितकारी होता है।

पुष्पपत्रफलच्छाया मूलवल्कल दारुभिः।
धन्या महीरुहा येषां विफला यान्ति नार्थिनः।।

(भविष्य पुराण)

पुष्प, पत्र, फल, छाया, जड़, छाल, लकड़ी आदि से जिनके पास आने वाला कोई भी निराश नहीं होता ऐसे वृक्ष धन्य हैं।

बौद्धिक क्रीडा

पैनी नजर

– राजेश गुजर

बच्चो! अपनी पैनी नजर से देखकर बताओ, कि इस चित्र में त्रिभुज, आयत, वर्ग, चतुर्भुज, अर्धवृत्त, वृत्त एवं पंचकोण कितने हैं?

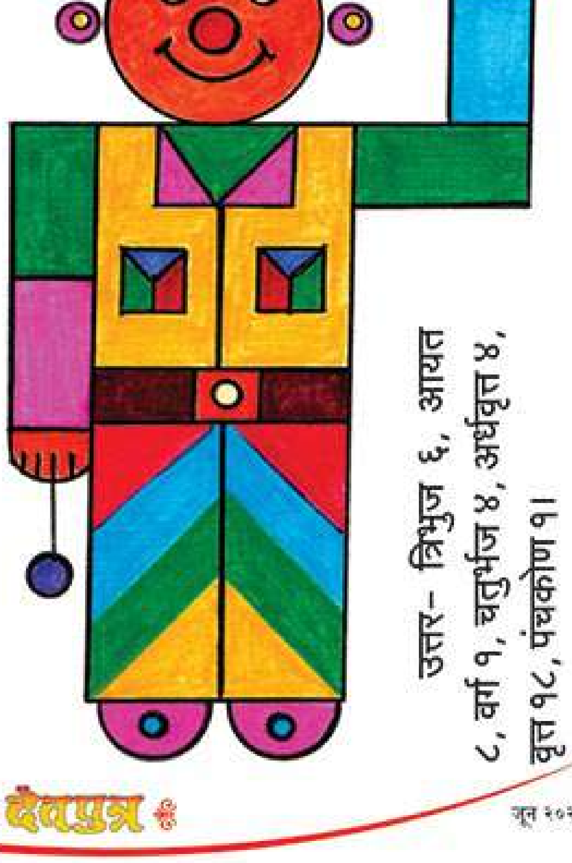

उत्तर– त्रिभुज ६, आयत ८, वर्ग १, चतुर्भुज ४, अर्धवृत्त ४, वृत्त १८, पंचकोण १।

सबको प्रसन्न रखना चाहिए

– तपेश भौमिक

जब से गोपाल राजदरबार में आने–जाने लगा था तब से लोग उसकी अच्छी खातिरदारी करने लगे थे। गाँव के लोग छोटे–मोटे विवादों में पंचायती करने हेतु गोपाल को ही बुलाने लगे। वह भी खुशी–खुशी ऐसे बुलावों पर जाने लगा। उसके निर्णय भी ऐसे होते कि लोग उसकी जय–जयकार करने लगते। लोग अब उस पर विश्वास करने लगे थे।

कुछ लोग तो अपना उल्लू सीधा करने हेतु उसके आगे–पीछे भी मँडराने लगे। फिर गोपाल भी ऐसा चक्कर चलाता कि वे अपनी बगलें झाँकते नजर आते। उन्हें कुछ भी प्राप्त नहीं होता।

कुछ लोग ऐसे भी थे कि उन्हें दरबार के गरमा–गरम समाचार चाहिए होते थे। इसी विषय में एक व्यक्ति ने एक दिन पूछ ही लिया कि– ''आज महाराज ने तुमसे बातें की?'' उसने ''हाँ'' में सिर हिला दिया। ऐसा जैसे कि कोई बड़ी बात न हो। उस आदमी ने फिर कहा– ''कहो न! कौन–सी बात हुई?''

गोपाल ने रोनी सूरत बनाकर कहा– ''महाराज ने मुझे आज कहा कि दूर हो जा मेरी नजरों से।'' उस आदमी ने कहा– ''भला यह कोई कहने लायक बात है।'' गोपाल ने कहा– ''कड़वी सच्चाई को झुठलाने की आदत मुझमें नहीं है। यह भी तो एक बात ही है।'' दो–चार दिन ऐसे उत्तर पाकर तब से बेसिर–पैर की बातें पूछने वाले लोग गोपाल से दूर ही रहने लगे। गोपाल ने भी चैन की साँस ली।

एक दिन एक याचक आकर कहने लगा कि– ''किसी ने उससे झगड़ा कर लिया है।'' यह कहकर उसके दोष गिनाने लगा। गोपाल ने उस याचक से छुटकारा पाने के लिए कहा– ''तुम ठीक ही कह रहे हो। दो दिन बाद आओ।''

उसके जाने के बाद गोपाल ने असामी यानी दोषी कहलाने वाले को बुला भेजा। उसने भी अपना पक्ष रखा। गोपाल ने उसे भी कहा कि– ''तुम ठीक ही कह रहे हो।'' उसके जाने के बाद गोपाल के पास ठहरे एक मित्र ने कहा– ''क्यों गोपाल! तुमने दोनों को ही कहा कि ठीक ही कह रहे हो। ऐसा कैसे हो सकता है?'' गोपाल ने दो टूक उत्तर देते हुए कहा– ''तुम ठीक ही कह रहे हो।'' यह सुनकर वह आँखें बड़ी–बड़ी करके गोपाल को ऐसे घूरने लगा कि वह कोई अजूबा हो।

फिर दो–दो दिन बाद गोपाल उन दोनों को अलग–अलग बुलाने लगा। फिर एक दिन गोपाल ने उन दोनों के आने पर यह कहा कि आपस में सुलह कर लो, नहीं तो दरबार तक बात पहुँचने पर बात बिगड़ सकती है। तुम दोनों भले आदमी हो।

वे दोनों भी गोपाल के पास हाजरी लगाते–लगाते थक चुके थे। उस दिन गोपाल ने उन्हीं के पैसों से मिठाई बुलवाकर बाँटी और पंचायत के सामने उनकी भूरि–भूरि प्रशंसा की। गोपाल के कहने पर दोनों आपस में गले मिल गए। गोपाल ने केवल यह कहा कि सबको प्रसन्न करना कठिन नहीं है।

– गुड़ियाहाटी, कूचबिहार (पश्चिम बंगाल)

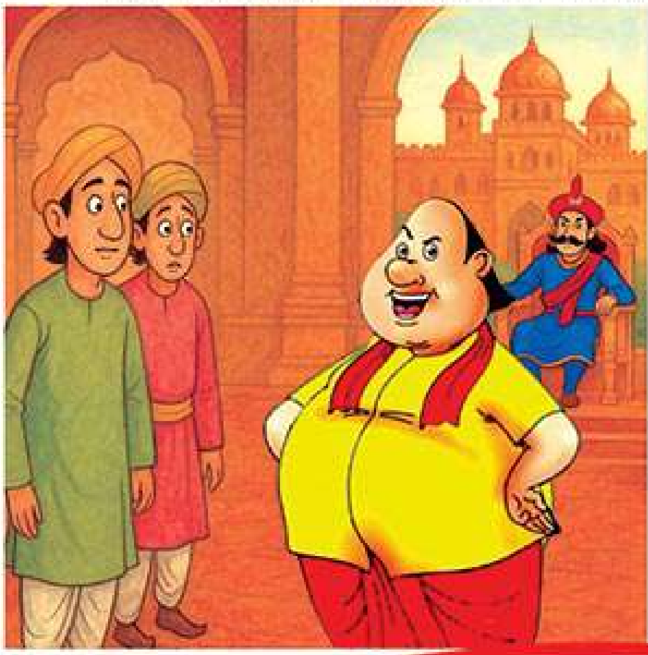

जादुई पुड़िया

– यशपाल शर्मा 'यशस्वी'

एक बहुत घना वन था। उसका नाम था सुंदर वन। सुंदर वन जैसा नाम था वैसा ही वहाँ काम था। कहने का अर्थ यथा नाम तथा गुण। चारों ओर पहाड़ियाँ थीं। हरी-भरी वनस्पति थीं। वहाँ निर्मल स्वच्छ जल से भरी अलकनंदा नदी बारह महीने ही बहती थी।

सुंदर वन के महाराजा नाहर सिंह बहुत अच्छे और भले थे। दयालु और प्रजा के हितैषी भी थे। पर अनुशासन के विषय में थोड़ा कठोर थे। उनके राज्य में पर्यावरण से खिलवाड़ करने वाले, गंदगी फैलाने वाले और देशद्रोही बातें करने पर कड़े दण्ड का कठोर प्रावधान था। वैसे जंगल के सभी जीव अच्छे थे। और अपने वन के नियम का पूरी निष्ठा से पालन करते थे।

यहाँ के महाराजा की एक और विशेषता थी कि वे हमेशा कुछ न कुछ अपने राज्य में प्रजा हितकारी नवीन-नवीन योजनाएँ चलाते। इसके लिए उनका इतना हृदय सुकोमल रहता कि जंगल का कोई भी जीव यदि कुछ अच्छा करना चाहता तो वे उसको पूरा मान-सम्मान देकर उसकी योजना को अपने वन में लागू करते थे।

एक दिन वे प्रातः-प्रातः सैर पर जा रहे थे कि अचानक उनकी दृष्टि एक नन्ही गिलहरी पर पड़ी। महाराजा को वह इस वन में नई लगी। वो उससे बात करने ही वाले थे कि अचानक रुनझुन गिलहरी उनके सामने हाथ जोड़कर उपस्थित हुई और विनम्रता-पूर्वक अभिवादन करते हुए बोली- ''खम्मा घणी महाराज! महाराज की जय हो।''

उसने महाराज से कहा- ''राजन! यह मेरे मौसी की बेटी है गिल्लू! कल रात ही नंदनवन से आई है। और गिल्लू यह हमारे महाराजाधिराज हैं।''

गिल्लू ने बड़ी विनम्रता से सिर झुकाकर नमस्कार किया।

बातचीत प्रारंभ हुई तब महाराज ने कहा- ''मैंने देखा गिल्लू आप अभी व्यायाम कर रही थी। प्रतिदिन करती हो क्या?''

''जी राजन! मैं प्रतिदिन प्रातः व्यायाम और योग करती हूँ।''

''व्यायाम तो सुना पर ये योग क्या है? इसके बारे में मुझे थोड़ा विस्तार से बताइए।''

गिल्लू यह सुनकर बहुत प्रसन्न हुई कि यहाँ के महाराज कितने अच्छे हैं इतने स्नेह रखते हैं सबसे।

उसने महाराज को योग का महत्व और यौगिक क्रियाओं के बारे में सविस्तार बताया।

''वाह वाह! यह योग तो सचमुच स्वास्थ्य के लिए जादुई पुड़िया है।''

''गिल्लू! कृपया तुम कल प्रातः से बड़े चौक में

आकर सबको योग सिखाना।''

यह सुनकर गिल्लू बहुत प्रसन्न हुई। महाराज ने पूरे जंगल में घोषणा करवा दी कि कल प्रातः पाँच बजे सभी को अनिवार्य रूप से बड़े चौक में एकत्र होना है।

पाँच बजे.. पाँच बजे... सबके मुँह पर आश्चर्य मिश्रित यही प्रश्न था। दूसरे दिन प्रातः महाराज समय से पूर्व बड़े चौक में आ गए और गिल्लू के कहे अनुसार पूरी व्यवस्था कर दी। गिल्लू यह सब देखकर उत्साह व उमंग से भर गई। योग अभ्यास के लिए महाराज नाहर सिंह जी भी अग्रिम पंक्ति में बैठ गए।

गिल्लू ने पहले सबको वार्मअप किया, फिर सूक्ष्म व्यायाम करवाते और इसी प्रकार प्रतिदिन के अभ्यास से सबको महत्वपूर्ण यौगिक क्रियाएँ सिखा दी। साथ ही उनको करने के नियम, ध्यान रखने योग्य बातें, उनसे होने वाले लाभों के बारे में बताया साथ ही इस रोग मुक्ति की जादुई पुड़िया भी बताया।

देखते ही देखते इस अभ्यास से जानवरों में बहुत उत्साह और स्फूर्ति आ गई। तभी नाहर सिंह ने सबको बताया कि मुझे आज ही गिल्लू बहन से पता चला कि हमारे देश के माननीय प्रधानमंत्री जी के प्रयास से अब प्रतिवर्ष २१ जून को पूरे विश्व में 'अन्तर्राष्ट्रीय योग दिवस' मनाया जाता है। और योग की पद्धति हमारे भारतीय ऋषियों की अनमोल देन है।

इसीलिए इस बार से हम भी प्रति वर्ष २१ जून को अन्तर्राष्ट्रीय योग दिवस बड़ी धूमधाम से मनाएँगे और बढ़िया योग प्रदर्शन करने वाले को सम्मानित करेंगे और गिल्लू को पूरे वन की ओर से योग गुरु का सम्मान दिया जाएगा। यह सुनकर सब बहुत प्रसन्न हुए और अपने-अपने अभ्यास में जुट गए।

आज योग दिवस था गिल्लू प्रातः जल्दी ही उठकर तैयार हो गई और आज के विशेष दिवस के लिए हाथ उठाकर ईश्वर को धन्यवाद देते हुए कहने लगी- ''इस योग रूपी जादुई पुड़िया से सबको स्वस्थ रखना।'' ऊपर हाथ उठाकर जोरदार प्रार्थना करने लगी-

सर्वे भवन्तु सुखिनः
सर्वे सन्तु निरामयाः।
सर्वे भद्राणि पश्यन्तु,
मा कश्चिद दुख भाग भवेत्।।

- चित्तौड़गढ़ (राजस्थान)

कविता

आँचल

- डॉ. संजय कुमार

कोयल गाती, मैना गाती, मोर नाचता जंगल में।
इस डाली से उस डाली, बंदर उछले पल-पल में।।
शेर गरज कर डरा रहा है, चीता फुर्ती से दौड़े,
गर्मी से राहत पाने को, साँप लिपट गया संदल में।
सुबह-सवेरे जल्दी उठकर, चिड़िया करती चूं चूं चूं,
बाज, चील, कबूतर जाकर, छूप जाते हैं बादल में।।
हाथी दादा मस्त चाल से, मटका करते इधर-उधर,
गिर जाते हैं कभी-कभी तो, फँस जाते हैं दलदल में।
भालू, हिरण, भेड़िए, गैंडे, बाघ और खरगोश सभी,
सुख पाते हैं जीवन का, धरती के इस आँचल में।।

- पटना (बिहार)

इस तरह बनाओ

चीता

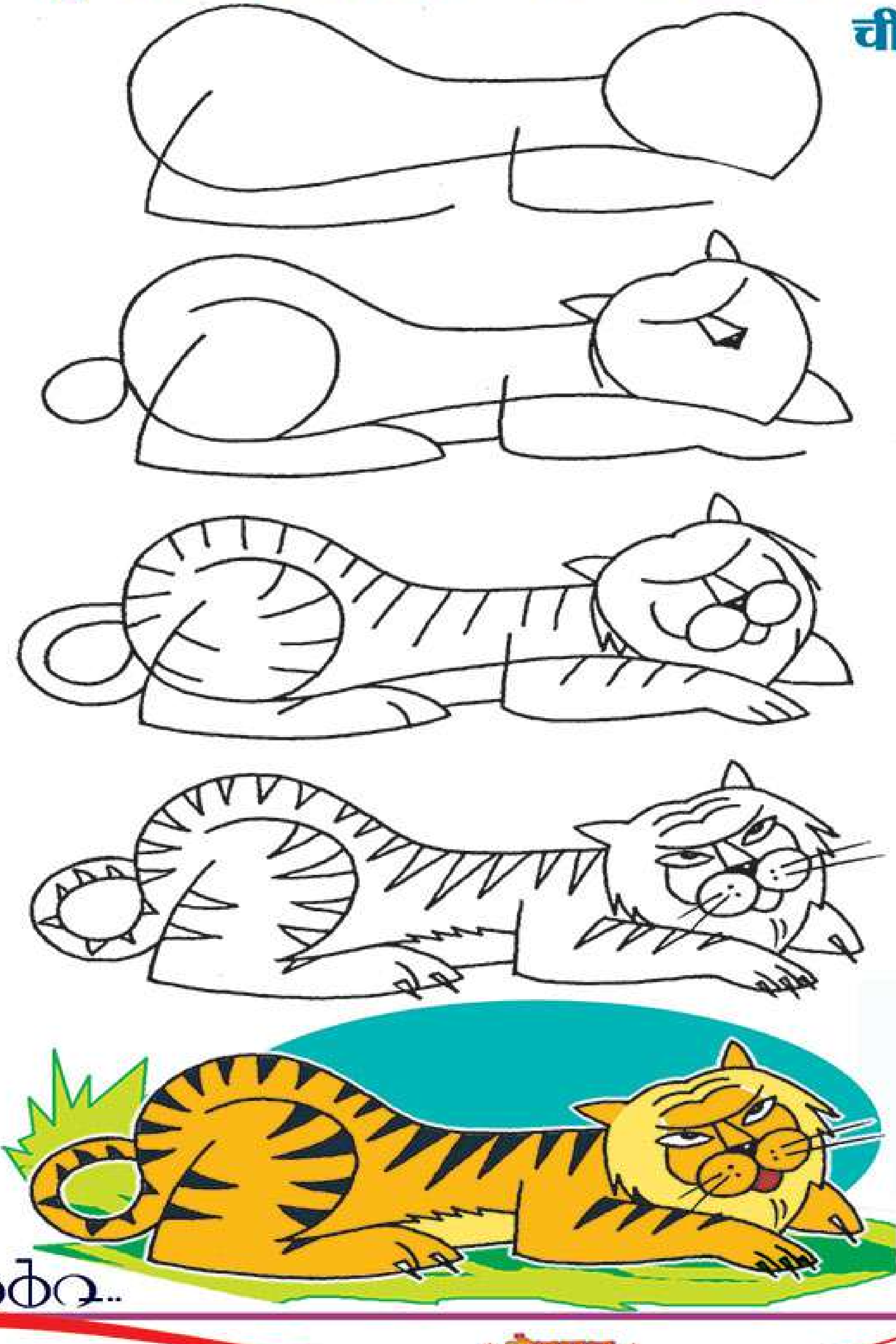

युधिष्ठिर का वैभव और दुर्योधन की ईर्ष्या

– मोहनलाल जोशी

(गत अंक से आगे)

राजसूय यज्ञ पूरा हो गया था। सभी राजा अपने देश चले गए थे। दुर्योधन इन्द्रप्रस्थ रुक गया। वह युधिष्ठिर का वैभव देखकर आश्चर्य चकित था। यज्ञ में सभी राजा भेंट लाए थे। वह भी असंख्य थी। नगर भी अत्यन्त विशाल था। युधिष्ठिर का अभिषेक हुआ, वह तो देवताओं से भी बढ़कर था। दुर्योधन सम्पूर्ण सभा–भवन देखना चाहता था।

युधिष्ठिर ने दुर्योधन और उसके भाइयों को सभा–भवन में घुमाया। सभा भवन में जहाँ आँगन दिखता वहाँ पर पानी होता। जहाँ पर पानी दिखता वहाँ पर आँगन होता। दीवार में दरवाजा दिखाई देता था, परन्तु होता नहीं था। दुर्योधन स्थान–स्थान पर गिरता या दीवार से टकराता। उसकी अज्ञानता से उसका बहुत अपमान हुआ।

दुर्योधन हस्तिनापुर लौट गया। भाई के वैभव से उसके मन में बहुत ईर्ष्या हुई। वह युधिष्ठिर का राजपाट लूटने की योजना बनाने लगा।

धृतराष्ट्र की सभा में द्रौपदी का चीर हरण

दुर्योधन ने युधिष्ठिर से जुए का दाँव लगाने को कहा। दुर्योधन की ओर से शकुनि पासे फेंकता था। शकुनि छल–कपट करके सारे दाँव जीतता गया। उसने युधिष्ठिर की सारी संपत्ति जीत ली। युधिष्ठिर के अधीन सारा राज्य भी जीत लिया।

बाद में दुर्योधन ने युधिष्ठिर को उकसाया। उसने युधिष्ठिर को द्रौपदी दाँव पर लगाने का कहा। कपटी शकुनि ने पासे फेंक कर उसे भी जीत लिया।

दुर्योधन ने अपने छोटे भाई दुशासन को कहा– ''द्रौपदी और पाँडव हमारे दास हो गए हैं। द्रौपदी को सभा में लेकर आओ। दु:शासन द्रौपदी के बाल पकड़कर सभा में खींच लाया। उसने द्रौपदी का सभा में बहुत अपमान किया। दु:शासन ने द्रौपदी की साड़ी खींची। भगवान कृष्ण ने साड़ी को हजारों मील लम्बा कर दिया। दुशासन खींचते–खींचते मूर्छित हो गया।

यह अद्‌भुत दृश्य देखकर सभी डर गए। धृतराष्ट्र ने युधिष्ठिर को सारा राजपाट वापिस दे दिया। उन्हें कौरवों की दासता से मुक्त कर दिया।

– बाड़मेर (राजस्थान)

(शेष अगले अंक में)

पद्मा चौगांवकर को 'देवपुत्र गौरव सम्मान'

इन्दौर। २७ अप्रैल २०२५। गंज बासौदा निवासी देश की प्रख्यात बाल साहित्यकार सौ. पद्मा चौगांवकर आज प्रतिष्ठित 'देवपुत्र गौरव सम्मान' २०२५ से सम्मानित की गई। स्थानीय संवाद नगर, स्थित 'देवपुत्र' बाल मासिक पत्रिका के सभागार में आयोजित इस गरिमामय आयोजन के मुख्य अतिथि श्री. यतीन्द्र कुमार शर्मा, लखनऊ (अ. भा. सह संगठन मंत्री विद्या भारती) एवं विशेष अतिथि डॉ. गोविन्द दत्तात्रेय गंधे, उज्जैन (निदेशक, कालिदास संस्कृत अकादमी) थे। अध्यक्षता सरस्वती बाल कल्याण न्यास एवं विद्या भारती मालवा प्रांत के अध्यक्ष डॉ. कमल किशोर चितलांग्या ने की।

बाल साहित्य जगत के निजी क्षेत्र के इस सम्मान की स्थापना वर्ष २००९ में स्व. श्री. कृष्ण कुमार जी अष्ठाना ने की थी। यह इस शृंखला का दसवाँ आयोजन था। अभी तक देश के शीर्षस्थ तेरह बाल साहित्यकार इस सम्मान से सम्मानित किए जा चुके हैं। जिनमें अब तक डॉ. सरोजिनी कुलश्रेष्ठ (नोएडा), डॉ. शंकर सुलतानपुरी (लखनऊ), श्री. रामभरोसे गुप्त 'राकेश' (आलमपुर), डॉ. श्रीकृष्णचंद्र तिवारी 'राष्ट्रबंधु' (कानपुर), डॉ. चक्रधर 'नलिन' (कानपुर), श्री. कृष्ण 'शलभ' (सहारनपुर), डॉ. विनोदचन्द्र पाण्डेय 'विनोद' (लखनऊ), डॉ. भगवती प्रसाद द्विवेदी (पटना), श्री. राजा चौरसिया (उमरियापान), डॉ. नागेश पाण्डेय 'संजय' (शाहजहाँपुर) और अब सौ. पद्मा चौगांवकर सम्मानित किए गए हैं।

सम्मानस्वरूप इस आयोजन में मानपत्र, शॉल श्रीफल एवं स्मृति चिह्न के साथ ३५ हजार रुपये की सम्मान निधि भी भेंट की जाती है।

'देवपुत्र' के इस गौरव पूर्ण आयोजन में स्वागत भाषण श्री. नारायण चौहान (प्रबंध संपादक, देवपुत्र) ने दिया। अतिथियों का स्वागत श्री. मोहनलाल गुप्ता (कोषाध्यक्ष) ने किया। आभार सीए. राकेश भावसार (प्रबंध न्यासी) ने माना। अतिथियों को स्मृति चिन्ह के रूप में देवी अहिल्याबाई की प्रतिमा श्री. गोपाल काकाणी ने भेंट की। संचालन श्री. गोपाल माहेश्वरी (संपादक, देवपुत्र) ने किया।

आयोजन में विद्या भारती के अ. भा. अधिकारी श्री. श्रीराम आरावकर (सह संगठन मंत्री), श्री. अखिलेश मिश्रा (क्षेत्रीय संगठन मंत्री विद्या भारती मध्यक्षेत्र), श्री. निखिलेश महेश्वरी (प्रांतीय संगठन मंत्री, मध्यभारत), श्री. अमित दवे (प्रांतीय संगठन मंत्री, महाकौशल), श्री. योगेश शर्मा (प्रांतीय संगठन मंत्री, मालवा), श्री. शशिकांत फड़के, श्री. भालचन्द्र रावले, श्री. गोपाल काकाणी, श्रीमती हीना नीमा सहित नगर की सामाजिक एवं साहित्य जगत की अनेक विभूतियाँ उपस्थित रहीं श्री. रमेश चौगांवकर की उपस्थिति भी विशेष प्रेरक रही। यह जानकारी प्रबंध संपादक श्री. नारायण चौहान ने दी।

आओ बादल

– नरेन्द्र देवांगन

जेठ के महीने में बहुत गर्मी पड़ी। पेड़–पौधे मुरझा गए। पानी के बिना धरती में दरारें पड़ गईं। फिर आषाढ़ में भी पानी नहीं गिरा।

गर्मी से पहाड़ बौखला उठा। उसने उड़ते बादलों को पुकारा– ''इधर आना। जरा इधर आना, भाई।''

''क्या बात है?'' बादल ने मुस्कुराते हुए पूछा।

पहाड़ बोला– ''धूप से मेरा शरीर जल रहा है। अब अधिक गर्मी सही नहीं जाती। थोड़ा पानी बरसा दो।''

''अभी नहीं! अभी और प्रतीक्षा करो।'' कहता हुआ बादल उड़ गया।

पहाड़ देखता ही रह गया। धूप तेज हो गई। वातावरण गर्म हो गया। हवा लू से काँपने लगी। पेड़–पौधे व छोटे–बड़े सभी जानवर परेशान हो उठे। सबने पहाड़ से कहा– ''तुम्हीं बादल को बरसने के लिए कहो। वह तुम्हारी बात मान जाएगा।''

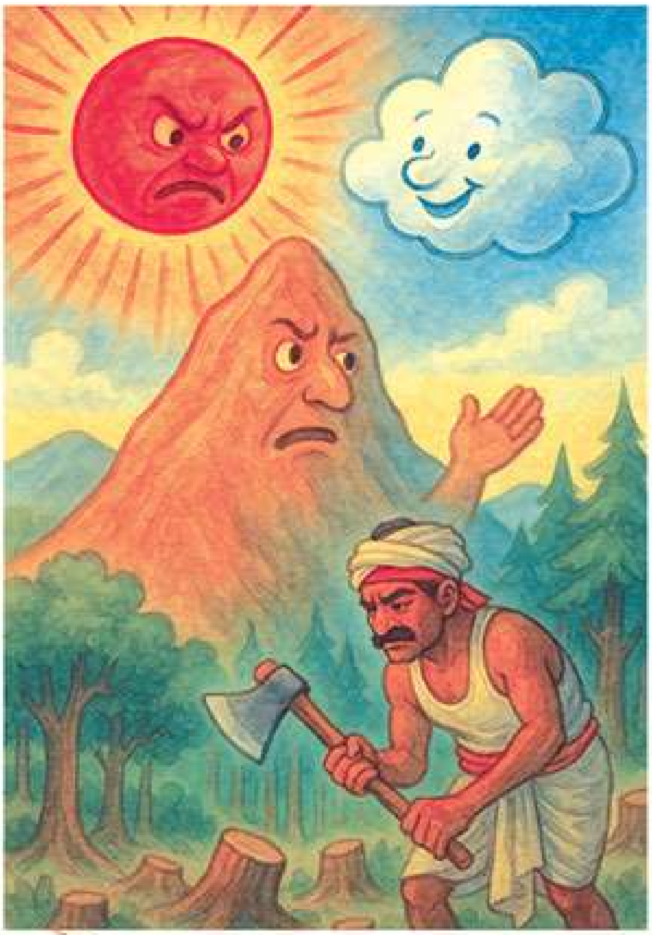

पहाड़ ने ऊपर देखा। आकाश बिलकुल साफ था। बादलों का कहीं नामोनिशान न था। चमचमाती तेज धूप से उसकी आँखें चौंधिया गईं। शरीर गर्म हो गया।

उसने रुँधे गले से कहा– ''बादल आओ! अब और न तड़पाओ। वर्षा के बिना सभी जीव परेशान हो उठे हैं।''

पहाड़ की बात सुनते ही बादल मुस्कुराता हुआ सामने आ खड़ा हुआ। फिर वह अपनी देह को पहाड़ जैसा बनाते हुए बोला– ''आदमी को अपनी करनी का फल भुगतने दो अपनी करनी का फल।'' पहाड़ हैरान रह गया।

बादल बोला– ''आदमी ने अपने स्वार्थ के लिए पेड़ों को काट दिया और जंगलों का विनाश कर डाला। पेड़ काटे, पर नए पेड़ नहीं लगाए। फिर मैं कैसे वर्षा करूँ?''

''पेड़ कट गए तो तुम्हें क्या? उजाड़ मैं हुआ हूँ, दु:ख मुझे है। तुम्हें इससे क्या मतलब?'' पहाड़ ने कहा।

बादल ने ठहाका लगाया। फिर अपनी देह बदलते हुए कहा– ''पेड़–पौधे पानी को वाष्प द्वारा ऊपर भेजते हैं। उससे हम बादलों का निर्माण होता है। सोचो, पेड़ न रहेंगे तो बादल बनेंगे कैसे? ऐसे में गर्मी ही बढ़ेगी।''

पहाड़ समझ गया। बादल आकाश में बहुत ऊपर उठ गया। गर्मी फिर बढ़ गई। सभी बेचैन हो उठे। उन्होंने पहाड़ से पूछा– ''क्या हुआ?''

पहाड़ समझ गया। बादल आकाश में बहुत

ऊपर उठ गया। गर्मी फिर बढ़ गई। सभी बेचैन हो उठे। उन्होंने पहाड़ से पूछा– ''क्या हुआ ?''

पहाड़ ने सारी बात बता दी। फिर बोला– ''पेड़ों को काट–काटकर जंगलों का विनाश कर रहे हो। पेड़ ही नहीं रहेंगे तो बारिश कहाँ से होगी ?''

''पहली बात तो हम पेड़ काटेंगे ही नहीं। यदि मजबूरी में पेड़ काटना ही पड़ा तो एक पेड़ के काटने पर दस पेड़ लगाएँगे। यह हमारी प्रतिज्ञा है।'' आदमी ने कहा।

पहाड़ बादल को पुकारने लगा, ''आओ बादल! आओ बादल! धरती की प्यास बुझा दो। तुम्हारी शर्त मान ली गई है।''

पहाड़ की गुहार सुन बादल अपनी टोली लेकर आ पहुँचा। तुरंत गर्मी कम हो गई। धरती पर कुछ किसान सिर पर हाथ धरे उदास बैठे हैं।

उनमें से एक छोटा बच्चा काले बादल को देखकर चिल्लाया– ''बापू! देखो काले बादल आ गए। अब जमकर पानी बरसेगा और हमारे खेत लहलहाने लगेंगे।''

तभी जमकर वर्षा होने लगी। थोड़ी ही देर में धरती तरबतर हो गई। किसानों के मुरझाए चेहरे प्रसन्नता से खिल उठे। वे नाचने लगे। यह सब देखकर पहाड़ भी खुशी से झूम उठा।

बादल ने कहा– ''आदमी! मैं वर्षा तो कर रहा हूँ। तू अपनी शर्त भूलना नहीं वर्ना पछताओगे।''

''ठीक है! ठीक है। शर्त नहीं भूलूँगा। प्रति दिन एक पौधा लगाऊँगा और उसे बड़ा पेड़ बनने तक उसकी देखरेख करूँगा। उसे नियमित खाद–पानी दूँगा ताकि वह शीघ्र ही बड़ा वृक्ष बन सके।'' यह बात आदमी ने चिल्लाकर कही।

बादल को बरसता देख सभी जीव मारे प्रसन्नता के झूम उठे।

– रायपुर (छत्तीसगढ़)

पहेलियाँ

बूझो तो जाने

– डॉ. राकेश चद्र

गर्मी में काँटों–सी चुभती,
जाड़ों में प्रिया–सी लगती।
बादल करते आँख–मिचौनी,
दिनभर लगती मौनी सोनी।।

बच्चों के झूले भी होते,
बच्चे करते उसमें खेल।
जो भी घूमे सेहत बनती,
पेड़–पौध की लंबी रेल।।

हाइड्रोजन और ऑक्सीजन का,
दो–एक भाग मिला है।
प्यास बुझाए, जो नहलाए,
बाढ़ लाए तब ढहे किला है।।

जो घर की खुशियों से भरता,
अक्ल का होता कच्चा।
निश्छल, भोला हमें हँसाए,
प्रेमी होता वो सच्चा।।

दादाजी की आँखें होतीं,
टीवी देखें घटती ज्योती।
धूप बचाए, ज्योति बढ़ाए,
बोलो बच्चो! क्या कहलाए?

– मुरादाबाद (उ. प्र.)

उत्तर– धूप, झूला,
पानी, बच्चा, चश्मा।

बरगद दादा

– डॉ. वीरेन्द्र कुमार भारद्वाज

बरगद दादा, बरगद दादा,
सिर पर अपने क्या है लादा ?
बड़ी–बड़ी ये दाढ़ी तेरी,
या माथे पे जटा घनेरी।।

तेरी बाँहें बड़ी–बड़ी हैं,
करने को ये प्यार खड़ी हैं।
तेरे पत्ते सुन्दर, भाते,
इनसे हम तो बैल बनाते।।

लाखों चिड़ियाँ चूँ–चूँ करतीं,
तेरी डाली–डाली फिरतीं।
बंदर मामा नाच दिखाते,
और हिरन भी आ सुस्ताते।।

जब हमको लगता है जाड़ा,
सूखे पत्ते चुने, जलाया।
अम्मा तेरी पूजा करती,
धागा ले परिकम्मा करती।।

हम बच्चे तो मौज मनाते,
पकड़–पकड़ कर फौज बनाते।
घो–घो रानी, आँख–मिचौनी,
मस्त मगन हों खेलें ज्यादा।।

हम तुमको न कटने देंगे,
देते तुमको पक्का वादा।
बरगद दादा, बरगद दादा,
सिर पर अपने क्या है लादा ?

– पटना (बिहार)

पुस्तक परिचय

हम धरती के फूल
मूल्य- २००/-

श्री. पुरुषोत्तम तिवारी 'साहित्यार्थी' के इस बाल गीत संग्रह में ६० से अधिक सुन्दर और विविध विषयों पर केन्द्रित रोचक बाल गीत हैं।

प्रकाशक- आई सेक्ट पब्लिकेशन, ई ७/२२, एसबीआई,
अरेरा कॉलोनी,
भोपाल- ४६२०१६ (म. प्र.)

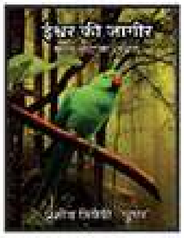

ईश्वर की जागीर
मूल्य- १५०/-

यह श्री. प्रमोद त्रिवेदी 'पुष्प' रचित २२ रोचक एवं शिक्षाप्रद बाल नाटकों का संग्रह है। ये नाटक मंचन योग्य एवं सरलता से अभिनय योग्य है।

प्रकाशक- प्रिन्सेप्स प्रकाशन, बी. डी. कॉम्प्लेक्स,
टिफ्रा ओव्हर ब्रिज,
बिलासपुर-४९५००१ (छत्तीसगढ़)

चीं चीं चिड़ियाँ
मूल्य- १५/-

श्री. उमेशकुमार चौरसिया की तीन छोटी-छोटी बाल नाटिकाओं की यह कृति अत्यंत सरल और बोधपूर्ण रचना है।

प्रकाशक- विनय पब्लिकेशन्स, १२-ए, केशवनगर, सिविल लाईन्स, जयपुर-१९ (राजस्थान)

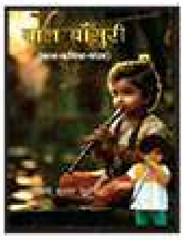

बाल बाँसुरी
मूल्य- २००/-

वरिष्ठ बाल साहित्यकार श्री. अश्वनी कुमार पाठक की यह बाल कविताओं की श्रेष्ठ कृति है। इन ४५ बाल कविताओं में लेखक एक सजग शिक्षक और कुशल संरक्षक की भूमिका में रोचक अभिव्यक्ति के साथ प्रस्तुत है।

प्रकाशक- नमन प्रकाशन ४२३१/१, अंसारी रोड, दरियागंज, नई दिल्ली-११०००२

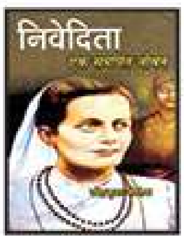

निवेदिता एक समर्पित जीवन
मूल्य- १५०/-

स्वामी विवेकानंद जी की सुयोग्य शिष्या भगिनी निवेदिता जन्म से भारतीय न होने पर भी भारतीयता से ओतप्रोत आदर्श परिव्राजिका थीं। उनका जीवनवृत्त सरल सुबोध शैली में प्रस्तुत किया है श्री. उमेश कुमार चौरसिया ने। यह एक बार बार पठनीय व संग्रहणीय पुस्तक है।

प्रकाशक- अनु प्रकाशन, ९५८, धामाणी मार्केट की गली, चौड़ा रास्ता, जयपुर (राजस्थान)

सरसंघचालक परंपरा

– नारायण चौहान

(श्री. सुदर्शन जी)

प्यारे बच्चो!

आपको मैंने पिछले अंक में मेरे दो सर संघचालक पू. बालासाहेब देवरस और पूजनीय प्रो. राजेन्द्र सिंह (रज्जू भैया) के संदर्भ में जानकारी दी थी। जब रज्जू भैया अस्वस्थ रहने लगे तब उन्होंने स्वास्थ्य कारणों से दायित्वमुक्त होने का विचार प्रकट किया। वर्ष २००० में पूजनीय के. एस. सुदर्शन जी को सर संघचालक का दायित्व दिया गया।

पूजनीय सुदर्शन जी का जन्म १८ जून १९३१ को रायपुर (छत्तीसगढ़) में हुआ था। उनका पूरा नाम कुप्पहली सीमारमैय्या सुदर्शन था। उन्हें प्राय: सुदर्शन जी के नाम से जाना जाता है। वे राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ के पाँचवें सरसंघचालक बने।

सुदर्शन जी की प्रारंभिक शिक्षा रायपुर (छत्तीसगढ़) में हुई और बाद में उन्होंने जबलपुर के इंजीनियरिंग कॉलेज में प्रवेश लिया। वे ९ वर्ष की आयु में संघ की शाखा जाने लगे थे। ३२ वर्ष की आयु में दूरसंचार के अभियांत्रिकी की डिग्री लेने के पश्चात् उन्होंने अपना सम्पूर्ण जीवन राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ के लिए समर्पित कर दिया।

क्षेत्र प्रचारक के रहते उन्होंने असमिया, बंगाली और पूर्वोत्तर राज्यों में बसने वाली जनजातियों की भाषाओं पर अच्छी पकड़ बना ली थी।

सर संघचालक के दायित्व पर रहते पूजनीय सुदर्शन जी ने देश के विभिन्न सामाजिक एवं राष्ट्रीय विषयों पर कार्य किया। १९६४ में वे मध्यभारत प्रांत के प्रान्त प्रचारक बने। वे अखिल भारतीय शारीरिक एवं बौद्धिक प्रमुख भी रहे। १९९० में वे संघ के सह सरकार्यवाह रहे। उनका सम्पूर्ण जीवन योग साधना ही था। २००१ में स्वेच्छा से सर संघचालक का दायित्व छोड़ दिया और वे एक महायोगी की तरह स्वयंसेवक के रूप में अपना दायित्व निभाते रहे। १५ सितम्बर २०१२ को पूज्य सुदर्शन जी ने अपना शरीर रायपुर में त्याग दिया।

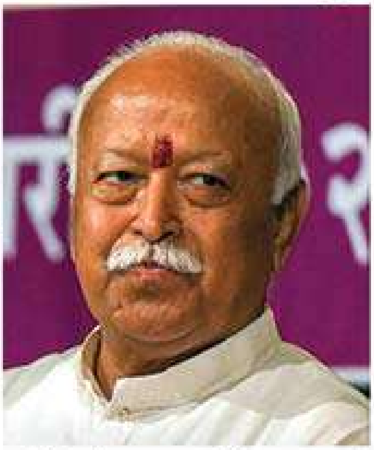

(श्री. मोहनराव जी भागवत)

२००९ में सर संघचालक का दायित्व डॉ. मोहनराव जी भागवत पर आ गया। वे राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ के छठे और वर्तमान सर संघचालक हैं। परम पूज्य सुदर्शन जी ने उन्हें अपना उत्तराधिकारी चुना था।

आपका जन्म ११ सितम्बर १९५० को चन्द्रपुर (महाराष्ट्र) में हुआ। आपने नागपुर वेटरनरी कॉलेज से पशु चिकित्सक के रूप में डिग्री प्राप्त की। आपातकाल के बाद आप १९७७ में महाराष्ट्र के अकोला में प्रचारक बने। १९९१ में आप अखिल भारतीय शारीरिक प्रमुख बने आगे चलकर आपने अखिल भारतीय प्रचारक प्रमुख का दायित्व भी निभाया। वर्ष २००० में आप मेरे सर कार्यवाह भी रहे है। आपके रहते संघ की विचारधारा को वैश्विक पहचान प्राप्त हुई तथा संघ का सामाजिक जीवन पर गहरा प्रभाव पड़ा।

– इन्दौर (म. प्र.)

योग रखे निरोग

– डॉ. मनोहर भंडारी

(गत अंक से आगे)

प्राणायाम– कम से कम पन्द्रह मिनट तक कपालभाति क्रिया, अनुलोम विलोम तथा भस्त्रिका प्राणायाम का अभ्यास अवश्य ही करें। शरीर की प्रत्येक कोशिका तक शुद्ध प्राणवायु के संचार तथा असाध्य रोगों से मुक्ति की दृष्टि से यह अत्यन्त ही आवश्यक है। जाबाल दर्शनोपनिषद में लिखा है कि प्राणायाम से चित्त की शुद्धि होती है। शोधकर्ताओं के अनुसार इससे ७०% तक अवसाद और तनाव कम होता है। अच्छी नींद आती है। रक्तसंचार अच्छा होने से टॉक्सिन बाहर हो जाते हैं। मस्तिष्क को विश्राम मिलता है। **डॉ. रिचर्ड ब्राउन** एम. डी. और **डॉ. पेट्रिसिया गेरबर्ग**, एम. डी. ने अपनी पुस्तक **द हीलिंग पॉवर ऑफ ब्रेथ** में अवसाद, चिन्ता और तनाव आदि अनेक रोगों तथा एकाग्रता और भावनात्मक स्थिरता में गहरी साँस की महती भूमिका का उल्लेख किया है।

ध्यान– पद्मासन अथवा सुखासन में बैठकर प्रतिदिन कम से कम दस मिनिट आँख बंदकर मन ही मन अपनी आती–जाती साँसों को देखें। इससे मन, मस्तिष्क, हृदय, फेफड़ों को विश्राम मिलता है, तनावकारी रसायनों में कमी आती है तथा प्रसन्नतादायी रसायनों में बढ़ोतरी होती है। अमेरिका के **डॉ. राबर्ट कीथ वैलेस** के अनुसार ध्यान के समय शरीर में ऑक्सीजन की खपत और हृदयगति कम हो जाती है। रक्त में लैक्टेड की मात्रा कम हो जाती है, जिसके कारण उच्च रक्तचाप और हृदयाघात से बचाव सम्भव है। तनाव और चिन्ता के समय त्वचा की अवरोधक क्षमता (जीएसआर) कम हो जाती है, जबकि ध्यान के समय असामान्य रूप से अत्यधिक बढ़ जाती है। **डॉ. हरबर्ट बेंसन** ने अपने शोध में पाया कि ध्यान से मस्तिष्क में सकारात्मक तरंगों में वृद्धि होती है। **ऑटोनामिक स्टेबिलिटी एण्ड मेडिटेशन** नामक अपने अनुसंधान के निष्कर्ष में प्रसिद्ध चिकित्सा विज्ञानी **डेविड डब्ल्यू और ओर्मे जान्सन** ने बताया कि ध्यान से व्यक्ति के तंत्रिका तंत्र में एक नवीन चेतना आ जाती है। साइकोसोमेटिक रोग दूर होने लगते हैं। शरीर में अतिरिक्त शक्ति का संचार तथा भण्डारण होने लगता है और अनेक तरह के रोगों पर नियंत्रण होने लगता है। अन्य वैज्ञानिकों के अनुसार ध्यान से अनिद्रा, अवसाद आदि रोग दूर हो जाते हैं। वास्तव में ध्यान सिम्पेथेटिक और पैरासिम्पेथेटिक तंत्रिका तंत्र को संतुलित करता है। परिणामस्वरूप मस्तिष्क, हृदय और श्वसन तंत्र भी रिलेक्स हो जाते हैं। उत्तेजना और तनावकारी रसायन कम हो जाते हैं। इम्युनिटी बढ़ जाती है।

शवासन या योगनिद्रा– दिनभर में प्रतिदिन ५ से १५ मिनिट का शवासन हृदय रोगों से बचाता है तथा उच्च रक्तचाप में आराम देता है।

– इन्दौर (म. प्र.)

(निरंतर अगले अंक में)

कविता

दाना पानी छत पर रखना

– चक्रधर शुक्ल

खाली बर्तन करे उदास,
दाना नहीं, लगी है प्यास।
दाना–पानी छत पर रखना,
सब चिड़ियों को तुमसे आस।।

छत पर गौरैया का आना,
चूँ–चूँ, चीं–चीं गीत सुनाना।
मन को कितना भाता है जी,
याद आ गया हमें जमाना।।

चिड़ियों को गुलगुला खिलाना,
दादी का उनसे बतियाना।
बच्चे इनके साथ खेलते,
अम्मा जी का बलि–बलि जाना।।

– कानपुर (उत्तर प्रदेश)

लघुकथा

सबक

– मीरा जैन

यूँ तो हरदम कहते हो बच्चों को कभी भी मारना नहीं चाहिए अब क्या हो गया आपको, पड़ोसी ने शिकायत क्या की, थप्पड़ जड़ दिया मेरे लाड़ले को, दस–बीस रुपए के नुकसान पर इतना क्रोध। क्या लाभ है तुम्हारे करोड़पति होने का। अरे! १०–२० के स्थान पर १०० रख देते उनके हाथ पर–

'चुप हो जाओ मालती! हर चीज पैसों से नहीं तौली जाती है समझी और ना ही अब ये बच्चा रहा है, इसने यह नुकसान पहली नहीं दूसरी बार किया है। पहली बार इसे शांति से ही समझाया था किन्तु इसकी समझ में कुछ नहीं आया, बात पैसों की नहीं मानवीय मूल्यों और संस्कारों की है। यह खेल–खेल में कितनी महत्वपूर्ण चीज तोड़ रहा है उसका इसे जरा भी भान नहीं है और ना ही ग्लानि। मैं नहीं चाहता यह बड़ा होकर धन के घमंड में इतना चूर हो जाए कि दूसरों के प्रति दया–करुणा एवं स्नेह के भाव को ही भूल जाए। इसे जीवन में हमेशा स्मरण रहेगा कि पिताजी के हाथ का पहला और आखिरी थप्पड़ क्यों पड़ा था? जिस वस्तु को इतने तोड़ा है वह मात्र १० की चीज नहीं बल्कि पक्षियों के प्यास बुझाने का बहुमूल्य साधन सकोरा था। इसे आभास होना चाहिए कि स्वयं की तरह अन्य जीवों के प्रति भी सजगता रखना जीवन में बहुत आवश्यक है।'' – **उज्जैन (म. प्र.)**

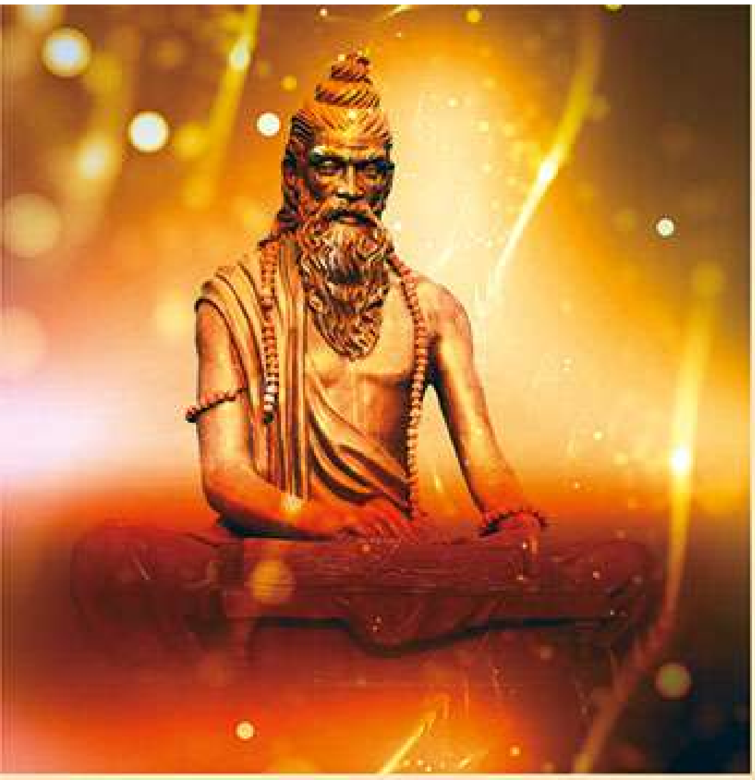

कविता–अन्तरराष्ट्रीय योग दिवस २१ जून

हम भारत के बालक

– डॉ. ज्ञानप्रकाश 'पीयूष'

बड़े सवेरे उठकर हम,
सूर्य नमस्कार करते हैं।
प्राणायाम और योग करते हैं,
तन को फिट हम रखते हैं।।

योग करेंगे, स्वस्थ रहेंगे,
खूब पढेंगे, नहीं डरेंगे।
जीवन को चमकाएँगे,
आगे बढ़ते जाएँगे।।

गुरुजन हैं आदर्श हमारे,
सच्ची शिक्षा देते हैं।
हर प्राणी में ईश्वर देखो,
ऐसा हमको कहते हैं।।

हम भारत के बालक हैं,
संस्कारों में नारे हैं।
मात–पिता हैं पूज्य हमारे,
लगते हमको प्यारे हैं।।

– सिरसा (हरियाणा)

डाक पंजीयन : एम.पी./आय.डी.सी./६२३/२०२४-२०२६ | आर.एन.आय. पं. क्रं. ३८५७७/८५

प्रकाशन तिथि २०/०५/२०२५ | प्रेषण तिथि ३०/०५/२०२५ | प्रेषण स्थल- आर.एम.एस., इन्दौर

कृपया शुल्क भेजते समय चेक/ड्राफ्ट पर केवल
'सरस्वती बाल कल्याण न्यास' लिखें।

बाल साहित्य और संस्कारों का अग्रदूत

सचित्र प्रेरक बाल मासिक

देवपुत्र सचित्र प्रेरक बहुरंगी बाल मासिक

स्वयं पढ़िए औरों को पढ़ाइए

उत्तम कागज पर श्रेष्ठ मुद्रण एवं आकर्षक साज-सज्जा के साथ

अवश्य देखें- वेबसाईट : www.devputra.com

स्वामी सरस्वती बाल कल्याण न्यास, इन्दौर, म. प्र. के लिए मुद्रक एवं प्रकाशक राकेश भावसार द्वारा अजीत प्रिन्टर्स एंड पब्लिशर्स, २०-२१, प्रेस कॉम्प्लेक्स, ए. बी. रोड, इन्दौर, म. प्र. से मुद्रित एवं ४०, संवाद नगर, नवलखा, इन्दौर, म. प्र. से प्रकाशित सम्पादक - गोपाल माहेश्वरी